

संविदावाद

'अनुबंधवाद' शब्द का इस्तेमाल व्यापक अर्थ में किया जा सकता है - यह दृष्टिकोण दर्शाने के लिए कि नैतिकता अनुबंध या समझौते पर आधारित है - या संकीर्ण अर्थ में - हार्वर्ड दार्शनिक टीएम स्कैनलॉन द्वारा हाल के वर्षों में विकसित एक विशेष दृष्टिकोण को संदर्भित करने के लिए, विशेष रूप से उनकी पुस्तक *क्लाट वी ओव टू ईच अदर* में। यह निबंध 'अनुबंधवाद' को संकीर्ण अर्थ में लेता है। हम स्कैनलॉन के अनुबंधवाद के संक्षिप्त सारांश से शुरू करते हैं, और फिर उनके दृष्टिकोण को अन्य सामाजिक अनुबंध सिद्धांतों और नैतिकता के निष्पक्ष खातों के बीच इसके मुख्य प्रतिद्वंद्वी - अर्थात् उपयोगितावाद के संबंध में रखते हैं। फिर हमारी चर्चा अनुबंधवादी खाते के लिए चुनौतियों की एक श्रृंखला के आसपास आयोजित की जाती है।

स्कैनलॉन के संविदावाद के इर्द-गिर्द पहले से ही बहुत सारा साहित्य मौजूद है। हमारा उद्देश्य उस साहित्य का सारांश प्रस्तुत करना नहीं है - और न ही उसमें कुछ नया योगदान देना है। बल्कि, हम संविदावाद की विशिष्ट अपील को समझाने का प्रयास करते हैं, साथ ही अन्य सिद्धांतों से इसके सामने आने वाली चुनौतियों को भी उजागर करते हैं।

1. संविदावाद क्या है?

स्कैनलॉन ने नैतिक तर्क के एक विशिष्ट विवरण के रूप में संविदावाद का परिचय दिया है। उन्होंने अपने विवरण को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया है:

कोई कार्य गलत है यदि परिस्थितियों के तहत उसका निष्पादन व्यवहार के सामान्य विनियमन के लिए सिद्धांतों के किसी भी सेट द्वारा अस्वीकृत किया जाता है जिसे कोई भी सूचित, बिना दबाव के, सामान्य सहमति के आधार के रूप में उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता है। (स्कैनलॉन 1998, पृष्ठ 153)।

लेकिन स्कैनलॉन के संविदावाद का संस्करण केवल यह निर्धारित करने से संबंधित नहीं है कि कौन से कार्य सही और कौन से गलत हैं। यह इस बात से भी संबंधित है कि कौन से कारण और तर्क के रूप उचित हैं। कोई सिद्धांत ऐसा है या नहीं जिसे उचित रूप से अस्वीकार नहीं किया जा सकता है, इसका आकलन व्यक्तियों या एजेंटों के निहितार्थों की अपील के द्वारा किया जाना चाहिए, जिन्हें सिद्धांत द्वारा अपेक्षित तरीके से तर्क करने के लिए लाइसेंस दिया गया है या निर्देशित किया गया है। स्कैनलॉन का संस्करण (1) नैतिक मानकों के अधिकार और (2) सही और गलत होने का गठन करने वाली चीजों का विवरण प्रस्तुत करता है। पहले के अनुसार, नैतिक व्यवहार द्वारा महसूस किया जाने वाला मूल मूल्य "पारस्परिक मान्यता" के संबंध में होता है। दूसरे के अनुसार, गलतता अनुचितता में निहित है: गलतता अनुचित होने का गुण है। किसी कार्य की गलतता को उन गुणों के साथ समान नहीं माना जाना चाहिए जो इसे अनुचित बनाते हैं। बल्कि, इसे इसके अनुचित होने के साथ समान माना जाना चाहिए; गलतता का चरित्र उच्च क्रम के तथ्य द्वारा पकड़ा जाता है कि गलत कार्य अनुचित हैं। गलत कार्यों में जो बात आम है वह यह है कि उन्हें दूसरों के लिए उचित नहीं ठहराया जा सकता है। इस प्रकार, हमारे मूल नैतिक चिंतन को निर्देशित करने वाले विभिन्न नैतिक विचार एक ही मानक विषय वस्तु द्वारा एकीकृत होते हैं। इस तरह, संविदावाद गलत होने के बारे में हमारे मूल चिंतन को निर्देशित करता है। प्राथमिक

नैतिक विधेय है; सही को "गलत नहीं" के रूप में परिभाषित किया गया है। गलत पर ध्यान केंद्रित करने का एक कारण उस डोमेन की ओर ध्यान आकर्षित करना है जिसे संविदावाद मैप करने के लिए चिंतित है, इस बारे में कि एक व्यक्ति के लिए दूसरे द्वारा *गलत किया जाना क्या है*।

नैतिक आवश्यकताएँ यह निर्धारित करती हैं कि तर्कसंगत एजेंट के रूप में व्यक्तियों के मूल्य के प्रति उचित प्रतिक्रिया कैसे दी जाए। मानव जीवन का विशिष्ट मूल्य कारणों और औचित्य का आकलन करने की मानवीय क्षमता में निहित है। इसलिए, किसी व्यक्ति के मूल्य की सराहना करने में उसके कारणों की सराहना करने और उन पर कार्य करने की क्षमता को पहचानना शामिल है। इस क्षमता को महत्व देने का तरीका व्यक्तियों के साथ उन सिद्धांतों के अनुसार व्यवहार करना है जिन्हें वे उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकते। ऐसा करने में, एजेंट एक ऐसे सिद्धांत द्वारा निर्देशित होता है जिसे सही रूप से इस रूप में वर्णित किया जा सकता है कि व्यक्ति ने स्वयं उस एजेंट को उसके साथ संबंध बनाने के उचित तरीके के बारे में सोचने के लिए निर्देशित होने के लिए अधिकृत किया है। संविदावाद कांटियन अंतर्दृष्टि को स्पष्ट करता है कि हमें व्यक्तियों के साथ कभी भी केवल साधन के रूप में नहीं बल्कि हमेशा स्वयं में साध्य के रूप में व्यवहार करना चाहिए। यह इसे उन सिद्धांतों के अनुसार उनके साथ व्यवहार करने के रूप में व्याख्या करता है जिन्हें वे उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकते।

2. संविदावाद अन्य सामाजिक अनुबंध सिद्धांतों से किस प्रकार भिन्न है?

संविदावाद सामाजिक अनुबंध के विचार को अपील करता है। यह नैतिकता की सामग्री (और, कुछ संस्करणों में, यह मानने का औचित्य भी कि हम नैतिकता का पालन करने के लिए बाध्य हैं) को नैतिक क्षेत्र में सभी लोगों के बीच एक समझौते की धारणा से प्राप्त करने का प्रयास करता है। समकालीन नैतिक दर्शन सामाजिक अनुबंध परंपरा की कई अन्य व्याख्याएँ प्रस्तुत करता है। संविदावाद को इन विकल्पों से अलग करना उपयोगी है।

अनुबंधवाद की जड़ें हॉब्स में हैं, जिसका विवरण पारस्परिक स्वार्थ पर आधारित है। नैतिकता सहकारी व्यवहार के उन रूपों में निहित है, जिसमें शामिल होना स्वार्थी एजेंटों के लिए पारस्परिक रूप से फायदेमंद है। (सबसे प्रमुख आधुनिक प्रतिपादक डेविड गौथियर हैं। गौथियर 1986 देखें।)

इसके विपरीत, *संविदावाद* का कोई भी रूप व्यक्तियों की समान नैतिक स्थिति पर आधारित होता है। यह इस नैतिक स्थिति की व्याख्या तर्कसंगत स्वायत्त एजेंसी के लिए उनकी क्षमता के आधार पर करता है। संविदावाद के अनुसार, नैतिकता इस बात में निहित है कि अगर हम तर्कसंगत स्वायत्त एजेंटों के रूप में हमारे समान नैतिक महत्व का सम्मान करने वाले दृष्टिकोण से बाध्यकारी समझौते करते हैं तो क्या परिणाम होगा। संविदावाद की जड़ें हॉब्स के बजाय रूसो में हैं: सामान्य इच्छा वह है जो हम संयुक्त रूप से करेंगे यदि हम स्वतंत्र और समान नागरिकों के दृष्टिकोण को अपनाते हैं। संविदावाद संविदावाद का एक विकल्प प्रदान करता है। संविदावाद के तहत, मैं दूसरों के साथ सौदेबाजी में अपने हितों को अधिकतम करने की कोशिश करता हूँ। संविदावाद के तहत, मैं अपने हितों को इस तरह से आगे बढ़ाने की कोशिश करता हूँ कि मैं दूसरों के सामने उचित ठहरा सकूँ जिनके अपने हित हैं।

इसके बाद हम संविदावाद को कांट के विशिष्ट नैतिक सिद्धांत से अलग करते हैं। कांट के नैतिक दार्शनिक ऐसे सिद्धांतों की तलाश करते हैं, जिन पर सभी तर्कसंगत एजेंट कुछ आदर्श स्थितियों के तहत सहमत होंगे। इस तरह के समझौते पर पहुँचने के लिए, कांट को हमारे नैतिक जीवन की कई (कुछ लोग कहेंगे कि बहुत ज़्यादा) ठोस विशेषताओं से दूर रहने की ज़रूरत है। (कांटियन नैतिकता में सहमति की धारणा पर ओनोरा ओनील की व्याख्या देखें; ओनील 2003।)

संविदावाद कई मामलों में कांट से अलग है। विशेष रूप से, यह नैतिकता के मानक बल का एक ठोस विवरण प्रस्तुत करता है, जो पारस्परिक सम्मान के संबंध के मूल्य पर आधारित है। तर्कसंगतता को ऐसी चीज़ नहीं माना जाता है जिसे नैतिक दृष्टिकोण से बाहर प्रदर्शित किया जा सके। एक और अंतर यह है कि संविदावाद उन सिद्धांतों की तलाश करता है जिन्हें कोई भी उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता है, बजाय उन सिद्धांतों के जिन पर सभी सहमत होंगे।

हालाँकि, स्कैनलॉन के संविदावाद में कांटियन तत्व हैं, क्योंकि यह एक स्वतंत्र समझौते की तलाश करता है जो स्वतंत्रता और समानता दोनों को स्पष्ट करता है। हम कह सकते हैं कि संविदावाद कांट की श्रेणीबद्ध अनिवार्यता (विशेष रूप से मानवता के सूत्र और अंत के साम्राज्य के सूत्र में, सार्वभौमिक कानून के अधिक परिचित सूत्र के बजाय) की चर्चाओं में निहित विचारों को अभिव्यक्ति देता है। वास्तव में, जैसा कि हम [खंड 5](#) में देखेंगे, डेरेक पारफिट का तर्क है कि, उनके मतभेदों के बावजूद, संविदावाद कांट के नैतिक सिद्धांत की सबसे अच्छी व्याख्या के साथ मेल खाता है।

सबसे प्रभावशाली हालिया सामाजिक अनुबंध सिद्धांतकार जॉन रॉल्स हैं। रॉल्स का अनुबंध स्कैनलॉनियन संविदावाद से दो प्रमुख तरीकों से भिन्न है। (1) रॉल्स का अनुबंध अधिक कांतीय है, क्योंकि वह ऐसे सिद्धांतों की तलाश करता है जिन पर सभी सहमत हों, बजाय उन सिद्धांतों के जिन्हें कोई भी उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता। (यह विरोधाभास विशेष रूप से चिह्नित है यदि हम रॉल्स के डेवी व्याख्यान (रॉल्स 1980) पर विचार करते हैं, जहां उनका काम सबसे अधिक कांतीय है।) (2) रॉल्स का अनुबंध राजनीतिक है - इसका उद्देश्य नैतिक सिद्धांतों को निर्धारित करने के बजाय एक उदार समाज के लिए सामान्य सामाजिक ढांचा तैयार करना है। नतीजतन, रॉल्स अपने समझौते के *पक्षों* को अज्ञानता के पर्दे के पीछे रख देता है, जहां वे अपनी पहचान के बारे में कई महत्वपूर्ण तथ्यों को नहीं जानते हैं क्योंकि हर व्यक्ति जानता है कि वह किसी भी व्यक्ति की तरह बन सकता है, इसलिए हर किसी को सभी के लिए चिंता होनी चाहिए। संक्षेप में, रॉल्स अज्ञानता के पर्दे के पीछे स्वार्थ का उपयोग न्याय के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करने के लिए करते हैं, जिसे सभी के लिए निष्पक्षता के रूप में समझा जाता है।

इसके विपरीत, संविदावाद अज्ञानता का आवरण नहीं लाता। मैं अपनी परिस्थितियों को जानता हूँ। यह स्वार्थ और स्वयं की अज्ञानता का संयोजन नहीं है जो मुझे हर किसी के हितों का ध्यान रखने के लिए मजबूर करता है, बल्कि यह मेरी चिंता है कि मैं हर किसी के सामने खुद को सही ठहराऊँ। यह प्रेरणा स्कैनलॉन के संविदावाद की एक प्रमुख विशेषता है। सभी सामाजिक अनुबंध सिद्धांतकार - यहाँ तक कि संविदावादी भी - इस बात से सहमत हैं कि एजेंट दूसरों के सामने खुद को सही ठहराना चाहते हैं। हालाँकि, संविदावादी के लिए, ऐसी इच्छा केवल रणनीतिक है - औचित्य साधनात्मक रूप से उपयोगी है क्योंकि यह मुझे दूसरों से वह करवाने में सक्षम बनाता है जो मेरे हितों की सेवा करता है। इसके विपरीत, संविदावादी के लिए, एजेंट दूसरों के सामने खुद को सही ठहराने की एक अंतर्निहित इच्छा से नैतिक रूप से प्रेरित होते हैं। इस इच्छा का होना एक नैतिक एजेंट होने का हिस्सा है।

इन मतभेदों के बावजूद, संविदावाद में अन्य सामाजिक अनुबंध सिद्धांतों के साथ कई बिंदु समान हैं। विशेष रूप से, संविदावाद एक गैर-उपयोगितावादी सिद्धांत प्रदान करने की आकांक्षा रखता है जो नैतिक स्थिति को व्यक्तियों के सार्वभौमिक गुण - तर्कसंगत नैतिक एजेंसी - पर आधारित करता है और इस प्रकार सामान्य सिद्धांत प्रदान करता है जिसका दायरा वैश्विक है। उपयोगितावाद के साथ इसी विरोधाभास की ओर अब हम मुड़ते हैं।

3. संविदावाद उपयोगितावाद से किस प्रकार भिन्न है?

संविदावाद एक निष्पक्ष नैतिक सिद्धांत है। समकालीन नैतिक दर्शन में, सामाजिक अनुबंध परंपरा के बाहर मुख्य निष्पक्ष नैतिक सिद्धांत उपयोगितावाद है। उपयोगितावाद व्यक्ति की नैतिक स्थिति को उसकी भलाई और दुख की क्षमता पर आधारित मानता है, और भलाई को एकमात्र नैतिक मूल्य मानता है। यह इस मूल्य के लिए उचित प्रतिक्रिया को इसे बढ़ावा देना मानता है। इस प्रकार उपयोगितावाद एक *परिणामवादी* नैतिक सिद्धांत है - नैतिकता मूल्यवान परिणाम लाने से संबंधित है।

संविदावाद और उपयोगितावाद के बीच तीन बुनियादी अंतर हैं। पहला अंतर दायरे का है। (1) उपयोगितावाद नैतिकता के हर क्षेत्र पर लागू होता है, जबकि संविदावाद केवल उस दायरे को कवर करता है जो हम एक दूसरे के प्रति ऋणी हैं। स्कैनलॉन खुद स्वीकार करते हैं कि यह नैतिकता का पूरा हिस्सा नहीं है। हम खंड 12 और 13 में इस अंतर पर लौटते हैं।

संविदावाद और उपयोगितावाद के बीच शेष दो अंतर विषय-वस्तु से संबंधित हैं। (2) *संविदावाद समग्रता* नहीं करता, बल्कि व्यक्तिगत व्यक्तियों के दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करता है। (3) संविदावाद कल्याण को एक बुनियादी नैतिक अवधारणा के रूप में नहीं मानता, बल्कि इसके बजाय विभिन्न व्यक्तिगत कारणों की अनुमति देता है।

किसी सिद्धांत के पक्ष और विपक्ष में एकमात्र कारण जो मायने रखता है जब हम यह तय कर रहे होते हैं कि उसे उचित रूप से अस्वीकार किया जा सकता है या नहीं, वह है "विभिन्न व्यक्तियों द्वारा उस सिद्धांत और उसके विकल्पों पर आपत्ति जताने के कारण" (स्कैनलॉन 1998, पृष्ठ 229)। किसी सिद्धांत की स्वीकार्यता, उस सिद्धांत को अस्वीकार करने के लिए व्यक्तियों के पास मौजूद कारणों की ताकत के एक-एक करके आकलन पर निर्भर करती है, इसकी तुलना उसके विकल्पों से की जाती है। चूंकि व्यक्तियों को अपनी ओर से आपत्ति करनी चाहिए न कि किसी समूह की ओर से, इसलिए एकल व्यक्तियों के कारणों पर यह प्रतिबंध शिकायतों के पारस्परिक एकत्रीकरण को रोकता है; यह कम शिकायतों की संख्या को एक व्यक्ति की भारी शिकायत से अधिक होने की अनुमति नहीं देता है।

इसलिए, उपयोगितावाद के विपरीत, संविदावाद बोझ के पारस्परिक एकत्रीकरण को अस्वीकार करता है। (हम नीचे कुछ महत्वपूर्ण अपवादों पर चर्चा करते हैं।) यह उन मुख्य पहलुओं में से एक है जिसमें यह उपयोगितावाद से अलग है। इस प्रकार संविदावाद हमारे नैतिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता को पकड़ता है, जिसे रॉल्स के प्रसिद्ध तर्क के अनुसार, उपयोगितावाद अनदेखा करता है: वह विशेषता जिसे वे "व्यक्तियों की पृथकता" कहते हैं (रॉल्स 1971)। सभी को एक साथ रखने और दूसरों को अधिक समग्र लाभ प्रदान करने के लिए एक व्यक्ति के अधिकारों को कुचलने की अनुमति देने के बजाय, संविदावाद यह मानता है कि हममें से प्रत्येक के पास जीने के लिए एक अनूठा जीवन है।

इसलिए संविदावाद ऐसे सिद्धांतों की तलाश करता है जो प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से लाभान्वित करते हैं और जो प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्र सहमति को नियंत्रित करते हैं।

उपयोगितावाद के लिए एकत्रीकरण (किसी न किसी रूप में) आवश्यक है। अक्सर ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं जहाँ एक व्यक्ति का सुख दूसरे व्यक्ति के सुख से टकराता है, या जहाँ एक व्यक्ति के सुख को सुरक्षित करने का एकमात्र तरीका किसी और को पीड़ा पहुँचाना होता है, या जहाँ हमें यह चुनना होता है कि कौन सा व्यक्ति किस दुख से पीड़ित है। हमें अलग-अलग लोगों के सुखों और दुखों से उत्पन्न नैतिक कारणों को संतुलित करने का एक तरीका खोजना होगा। यदि हम उपयोगितावादी दृष्टिकोण को बनाए रखते हैं, तो यह देखना कठिन है कि हम किसी प्रकार के एकत्रीकरण के बिना यह कैसे कर सकते हैं - विभिन्न सुखों और दुखों को एक साथ जोड़ना।

इसके विपरीत, संविदावाद एकत्रीकरण से बचने में सक्षम प्रतीत होता है, क्योंकि यह व्यक्तिगत सुख और दर्द से नहीं, बल्कि कारणों की अधिक लचीली अवधारणा से शुरू होता है। मेरे सुख और दर्द के विपरीत, मेरे कारण दूसरों की स्थिति के प्रति उत्तरदायी हो सकते हैं। इसे देखने के लिए, हम स्कैनलॉन के कारणों के उपयोग की दो विशेषताओं का पता लगाते हैं: अस्वीकृति उचित होनी चाहिए, और कारण केवल भलाई तक सीमित नहीं हैं।

3.1 उचित अस्वीकृति

किसी सिद्धांत को उचित रूप से अस्वीकार करने के लिए, मुझे उस पर कुछ आपत्ति होनी चाहिए। यह आपत्ति सिद्धांत के परिणामस्वरूप मुझे होने वाले कुछ प्रत्यक्ष नुकसान से शुरू हो सकती है। अब तक, यदि इसमें शामिल नुकसान दर्द या पीड़ा है, तो संविदावाद उपयोगितावाद को प्रतिबिंबित करता है। हालांकि, यह तथ्य कि एक सिद्धांत मुझ पर नकारात्मक रूप से प्रभाव डालता है, पर्याप्त नहीं है। यह जानने के लिए कि क्या मैं सिद्धांत को उचित रूप से अस्वीकार कर सकता हूँ, मुझे यह भी पूछना चाहिए कि यह दूसरों पर कैसे प्रभाव डालता है। यदि कोई सिद्धांत मुझ पर एक निश्चित बोझ (बी1) डालता है, लेकिन हर विकल्प किसी और पर एक बड़ा बोझ (बी2) डालता है, तो बी1 मुझे सिद्धांत को अस्वीकार करने का कारण नहीं देता है। यदि मैं उचित हूँ, तो मैं अपनी आपत्ति वापस ले लेता हूँ जब मुझे लगता है कि आपका कारण अधिक दबाव वाला है। (इसके विपरीत, यह कहना कोई मतलब नहीं रखेगा कि एक उपयोगितावादी ने 'अपना दर्द वापस ले लिया'।

संविदावाद में, व्यक्ति आत्म-सम्मान और दूसरों के प्रति सम्मान दोनों से प्रेरित होते हैं। चूँकि प्रत्येक व्यक्ति आंशिक रूप से अपने हितों की चिंता से प्रेरित होता है, इसलिए संविदावाद परिणामवादी कारणों को आधार बना सकता है। दूसरों के प्रति हमारा जो दायित्व है, उसका एक हिस्सा उनके हितों को बढ़ावा देना है। इसलिए संविदावाद नैतिक विचार की संरचना के महत्वपूर्ण परिणामवादी पहलुओं को समायोजित कर सकता है।

उपयोगितावाद के विपरीत, हालांकि, संविदावाद के अंतर्निहित मूल्य का विवरण यह दावा नहीं करता है कि मूल्य के प्रति केवल एक ही तर्कसंगत दृष्टिकोण है। इसलिए संविदावाद पूरी तरह से परिणामवादी सिद्धांत बने बिना परिणामवादी पहलुओं को समायोजित कर सकता है। (यह कांटियन नैतिकता के भोले संस्करणों पर संविदावाद के एक लाभ का प्रतिनिधित्व करता है, जो सभी परिणामवादी कारणों को अस्वीकार करता है और इस प्रकार यह समझाना बहुत कठिन बना देता है कि हमारे कार्यों के

परिणामों का कोई नैतिक महत्व क्यों है।) परिणाम नैतिकता (जैसे उपयोगितावाद) के विपरीत, संविदावाद के लिए जो आधारभूत है वह अवांछनीय को कम करना नहीं है, बल्कि उन सिद्धांतों पर विचार करना है जिन्हें कोई भी उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता है। नैतिक सिद्धांत दूसरों के साथ आपसी सम्मान की शर्तों पर रहने के विचार पर आधारित हैं। इसका मतलब यह है कि कुछ परिणामवादी पहलुओं को समायोजित करने के साथ-साथ, संविदावाद कुछ कर्तव्य संबंधी अंतर्ज्ञानों को भी समायोजित कर सकता है: व्यक्तियों के साथ कुछ खास तरीकों से व्यवहार करने के खिलाफ सामान्य ज्ञान निषेध, यहां तक कि उन परिस्थितियों में भी जिनमें ऐसा करने के परिणामों का कुल मूल्य बहुत अधिक है। कौन से निषेध उचित हैं? इस प्रश्न का उत्तर “इस बात पर विचार करके दिया जा सकता है कि दूसरों को हमारी जान लेने की अनुमति देने वाले कौन से सिद्धांत उचित रूप से अस्वीकार किए जा सकते हैं” (स्कैनलॉन 1998, पृष्ठ 85)। इन सिद्धांतों में से कुछ ऐसे हो सकते हैं जिनमें “किसी के पास मौजूद कारणों के बारे में एक निश्चित दृष्टिकोण को स्वीकार करना शामिल है: कि दूसरों को बचाने का सकारात्मक मूल्य किसी की हत्या को उचित नहीं ठहराता” (स्कैनलॉन 1998, पृष्ठ 84)।

3.2 खुशहाली से परे कारण

संविदावाद के लिए उपलब्ध एक और संसाधन जो उपयोगितावाद के लिए उपलब्ध नहीं है, वह यह है कि किसी सिद्धांत को अस्वीकार करने के मेरे कारण मेरी भलाई तक सीमित नहीं हैं - चाहे उस धारणा को कितने भी व्यापक रूप से समझा जाए। व्याख्या की आसानी के लिए, आइए हम फिलहाल उपयोगितावादी का अनुसरण करें, और 'बोझ' के बारे में केवल मेरी भलाई पर नकारात्मक प्रभाव के संदर्भ में सोचें। किसी सिद्धांत को अस्वीकार करने का मेरा कारण शायद यह नहीं है कि यह मुझ पर एक निश्चित बोझ डालता है, बल्कि यह है कि यह किस तरह से उस बोझ को डालता है - और इस प्रकार सिद्धांत मेरे बारे में क्या कहता है। उदाहरण के लिए, एक सिद्धांत पर विचार करें जो नस्ल के आधार पर लाभ और बोझ आवंटित करता है, और इसकी तुलना एक ऐसे सिद्धांत से करें जो समान लाभ और बोझ को यादृच्छिक रूप से आवंटित करता है। मैं नस्लवादी सिद्धांत को केवल इसलिए अस्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि यह मुझ पर बोझ डालता है - आखिरकार, यादृच्छिक सिद्धांत किसी और पर एक समान बोझ डालता है। बल्कि, मैं नस्लवादी सिद्धांत को अस्वीकार करता हूँ, क्योंकि लाभों के वितरण के लिए मेरी जाति को प्रासंगिक आधार मानकर, यह उस बोझ को इस तरह से थोपता है जो एक व्यक्ति के रूप में मेरी स्थिति का सम्मान करने में विफलता का गठन करता है।

यदि हम बोझ और भलाई के बीच उपयोगितावादी संबंध को त्याग देते हैं, तो हम कह सकते हैं कि बोझ के वितरण का तरीका ही एक अलग तरह का अतिरिक्त बोझ डालता है - सम्मान न किए जाने का बोझ। इसी तरह, मैं एक ऐसे सिद्धांत को अस्वीकार कर सकता हूँ जो मनमाने ढंग से कुछ लोगों को बाकी सभी द्वारा उठाए जाने वाले बोझ से छूट देता है, इस आधार पर कि ऐसा सिद्धांत मेरे साथ अनुचित व्यवहार करता है - भले ही विकल्प एक ऐसा सिद्धांत हो जो उस बोझ को सभी पर डालता हो। उदाहरण के लिए, एक ऐसी स्थिति की कल्पना करें जहाँ घास को संरक्षित करने के लिए, हमें कम से कम 90% लोगों को घास पर चलने से बचना चाहिए, लेकिन अगर 10% लोग घास पर चलते हैं तो इससे कोई नुकसान नहीं होता है। मैं एक ऐसे सिद्धांत पर आपत्ति कर सकता हूँ जो विशेषाधिकार प्राप्त नस्लीय अल्पसंख्यक के सदस्यों को घास पर चलने की अनुमति देता है, भले ही मेरा पसंदीदा सिद्धांत ऐसा हो जहाँ कोई भी घास पर चलने का आनंद न ले। मेरी अस्वीकृति ईर्ष्या पर आधारित नहीं है, बल्कि

वितरण के लिए नस्ल को एक वैध आधार मानकर इस सिद्धांत द्वारा दिखाए गए अनादर पर आधारित है।

संविदावादी *कारण एकत्रीकरण* की तुलना में अधिक लचीले होते हैं, क्योंकि वे हमें किसी जटिल उपयोगितावादी गणना पर निर्भर रहने के बजाय नैतिक रूप से प्रासंगिक विचारों पर सीधे प्रतिक्रिया करने की अनुमति देते हैं। (कृत्रिम चक्रों के बारे में सोचें जिनसे उपयोगितावादी को किसी ऐसे सिद्धांत को अस्वीकार करने के लिए गुजरना पड़ता है जो कुशलतापूर्वक खुशी को अधिकतम करता है, लेकिन नस्लवादी या मनमाना होता है।) मामले के नैतिक हृदय पर सीधे आगे बढ़ने से, संविदावाद इस बात की अधिक संतोषजनक व्याख्या भी प्रस्तुत करता है कि कुछ व्यवहार गलत *क्यों* हैं।

इस प्रकार संविदावाद ऐसे सिद्धांत उत्पन्न कर सकता है जो एकत्रीकरण की स्पष्ट अपील के बिना, एक दूसरे के विरुद्ध विभिन्न लोगों के हितों को संतुलित करते हैं। यह नैतिक दर्शन में एक महत्वपूर्ण विकास है, क्योंकि यह हमें उपयोगितावाद के विरुद्ध तर्कों को दो वर्गों में अलग करने में सक्षम बनाता है: *निष्पक्षता के विरुद्ध तर्क और एकत्रीकरण के विरुद्ध तर्क*। पहली श्रेणी की आपत्तियाँ संविदावाद पर भी लागू होती हैं, जबकि दूसरी श्रेणी की आपत्तियाँ लागू नहीं होती हैं। हम [खंड 8 में एकत्रीकरण पर लौटते हैं](#); और [खंड 9](#) में निष्पक्षता के लिए एक सामान्य आपत्ति पर विचार करते हैं। एक बार संविदावाद क्षेत्र में प्रवेश कर गया, तो हम निष्पक्षता के तर्कों को इस तरह नहीं मान सकते जैसे कि वे उपयोगितावाद के तर्क हों।

4. संविदावाद अन्य गैर-परिणामवादी नैतिक सिद्धांतों से किस प्रकार भिन्न है?

हालाँकि यह पूरी तरह से संविदावाद के लिए समर्पित नहीं है, स्कैनलॉन की 2008 की पुस्तक *नैतिक आयाम: अनुमति, अर्थ, दोष*. स्कैनलॉनियन संविदावाद से संबंधित कई मुद्दों को संबोधित करती है, विशेष रूप से अनुमति के निर्णयों के लिए इरादे की अप्रासंगिकता, दो प्रकार की जिम्मेदारी के बीच अंतर और दोष का विश्लेषण। ये मुद्दे संविदावाद को इसके कुछ गैर-परिणामवादी प्रतिद्वंद्वियों से अलग करने में मदद करते हैं।

4.1. अनुमति के प्रति इरादे की अप्रासंगिकता

कई सिद्धांतकार एजेंटों के इरादों के महत्व पर जोर देकर गैर-परिणामवादी नैतिक सिद्धांतों को उपयोगितावाद जैसे परिणामवादी प्रतिद्वंद्वियों से अलग करते हैं। अन्यथा अनुमेय कार्य गलत कारण से या गलत उद्देश्य की खोज में किए जाने पर अस्वीकार्य हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, *दोहरे प्रभाव का सिद्धांत* उन कार्यों को मना करता है जिनका उद्देश्य किसी निर्दोष व्यक्ति की मृत्यु को या तो अंत के रूप में या अंत के साधन के रूप में करना है, भले ही वही परिणाम एक साइड-इफ़ेक्ट के रूप में अनुमेय हो। दो परिचित उदाहरणों पर विचार करें:

दवा: "यदि उपलब्ध दवा की सीमित मात्रा का उपयोग या तो एक रोगी को बचाने के लिए या पाँच अन्य को बचाने के लिए किया जा सकता है, तो उसे पाँचों को देना जायज़ है, भले ही एक व्यक्ति मर जाए।

लेकिन उसी व्यक्ति से उसी दवा को रोकना जायज़ नहीं होगा ताकि उसकी मृत्यु के बाद उसके अंगों को उनमें प्रत्यारोपित करके पाँच अन्य लोगों को बचाया जा सके।" (स्कैनलॉन 2008, पृष्ठ 1)

सैन्य लक्ष्य: "बहुत से लोग मानते हैं कि युद्ध में सैन्य लक्ष्य पर बमबारी करना जायज़ हो सकता है, भले ही इससे आस-पास रहने वाले कुछ गैर-लड़ाकों की भी मृत्यु हो जाए, लेकिन आबादी का मनोबल गिराकर युद्ध के अंत को जल्द करने के लिए उतनी ही संख्या में गैर-लड़ाकों पर बमबारी करना जायज़ नहीं होगा।" (स्कैनलॉन 2008, पृष्ठ 2)

अपनी सहज अपील के बावजूद, स्कैनलॉन दोहरे प्रभाव के सिद्धांत को खारिज करते हैं, यह तर्क देते हुए कि इरादा *सीधे तौर पर* अनुमति के लिए प्रासंगिक नहीं है। स्कैनलॉन मानते हैं कि इरादों का *पूर्वानुमानात्मक* महत्व होता है - वे यह अनुमान लगाने में मदद करते हैं कि कोई एजेंट किसी कार्य को *कैसे* करेगा, और क्या वह उस कार्य को करने में या किसी बड़ी योजना को लागू करने में सफल होने की संभावना है जिसका यह कार्य एक हिस्सा हो सकता है। लेकिन इस तरह के पूर्वानुमान केवल अनुमति के निर्णयों के लिए अप्रत्यक्ष रूप से प्रासंगिक हैं। स्कैनलॉन इस बात से भी सहमत हैं कि किसी एजेंट ने किसी दिए गए अवसर पर कैसे *विचार-विमर्श किया* है, इसका आकलन करते समय इरादे मायने रखते हैं। लेकिन वे *अनुमति* के निर्णयों के लिए प्रासंगिक नहीं हैं, जो इसके बजाय पूछते हैं कि "क्या कोई एजेंट किसी खास तरह का कार्य कर सकता है।" (स्कैनलॉन 2008, पृष्ठ 2.)

जूडिथ थॉमसन (थॉमसन 1986, पृ. 101-102) के काम का हवाला देते हुए, स्कैनलॉन का तर्क है कि इरादे पर ध्यान केंद्रित करने से अनुमति के बारे में अविश्वसनीय निष्कर्ष निकल सकते हैं। दो परिचित विचार प्रयोगों पर विचार करें।

लूप: "सुप्रसिद्ध ट्रॉली-समस्या मामले में भागती हुई ट्रॉली को साइडट्रैक पर स्विच करना जायज़ लगता है, जिस पर वह सिर्फ़ एक व्यक्ति को टक्कर मारेगी, बजाय इसके कि वह सीधे आगे बढ़ती रहे और पाँच लोगों को टक्कर मारे। लेकिन [थॉमसन के] लूप मामले में ट्रॉली को स्विच करना भी जायज़ लगता है... जिसमें साइडट्रैक घूमकर मुख्य लाइन से फिर से जुड़ जाता है, ताकि अगर ट्रॉली एक व्यक्ति को नहीं टक्कर मारती और इस तरह रुक जाती है, तो वह लूप के चारों ओर घूमती रहेगी और पाँच लोगों को टक्कर मारेगी।" (स्कैनलॉन 2008, पृष्ठ 18.)

डॉक्टर: "मान लीजिए कि एक मरीज़ गंभीर रूप से बीमार है और उसे बहुत दर्द हो रहा है। दर्द से राहत दिलाने वाली दवा का एकमात्र कोर्स भी मरीज़ की मौत का कारण बन सकता है। मान लीजिए कि मरीज़ चाहता है कि उसे यह दवा दी जाए। क्या इसे देने की अनुमति डॉक्टर के इरादे पर निर्भर करती है?" (स्कैनलॉन 2008, पृष्ठ 19.)

अधिकांश लोग इस बात से सहमत हैं कि लूप में ट्रॉली को बदलना जायज़ है, भले ही "कोई ट्रॉली को सिर्फ़ इसलिए बदलता है क्योंकि इससे एक व्यक्ति को मारने से पाँच लोगों को मारने से रोका जा सकेगा"। (स्कैनलॉन 2008, पृष्ठ 18) लेकिन यह फ़ैसला स्पष्ट रूप से दोहरे प्रभाव के सिद्धांत का उल्लंघन करता है। अधिकांश लोग इस बात से भी सहमत हैं कि डॉक्टर के लिए दवा देना जायज़ है, चाहे उसका इरादा कुछ भी हो - चाहे मरीज़ के दर्द को दूर करना हो, उसकी मृत्यु को जल्दी करना हो और इस तरह उसकी पीड़ा को खत्म करना हो, या फिर मरीज़ की संपत्ति को विरासत में पाने के लिए उसकी मृत्यु को जल्दी करना हो। यह अंतिम इरादा डॉक्टर के चरित्र और विचार-विमर्श के हमारे मूल्यांकन को प्रभावित करता है। लेकिन यह उसके *काम को* अस्वीकार्य नहीं बनाता। "जो चीज़ किसी

काम को गलत बनाती है, वह है वह विचार या विचार जो निर्णायक रूप से उसके खिलाफ़ गिने जाते हैं, न कि एजेंट द्वारा इन विचारों को उचित महत्व न देना।" (स्कैनलॉन 2008, पृष्ठ 23)

संविदावादी के लिए, दूसरों के लिए औचित्य वह मानक प्रदान करता है जो यह निर्धारित करता है कि कौन से विचार विशेष कार्यों के विरुद्ध निर्णायक रूप से मायने रखते हैं। प्रत्यारोपण के मामलों में, संविदावादी प्रश्न यह है कि क्या प्रत्यारोपण के माध्यम से जीवन बचाने की संभावना किसी के रोगियों की सहायता करने के सामान्य कर्तव्य के अपवाद को उचित ठहराती है। स्कैनलॉन का तर्क है कि ऐसा नहीं है, क्योंकि इस तरह के अपवाद की अनुमति देने वाले सिद्धांत को भावी रोगियों द्वारा उचित रूप से अस्वीकार किया जा सकता है। यदि डॉक्टर अपने रोगियों के अंगों को प्रत्यारोपित करने के इरादे से उपचार रोकते हैं, तो यह इरादा गलत है क्योंकि इच्छित कार्य गलत है, और इसके विपरीत नहीं।

यह ध्यान देने योग्य है कि, जबकि थॉमसन के लूप पर चर्चा करने वाले अधिकांश दार्शनिक स्कैनलॉन के अंतर्ज्ञान को साझा करते हैं कि ट्रॉली को स्विच करना अनुमेय है, यह सहमति सर्वसम्मति से नहीं है। उदाहरण के लिए, लियाओ एट अल। 2012 का तर्क है कि लूप मामलों के बारे में वास्तविक अंतर्ज्ञान अत्यधिक परिवर्तनशील हैं और प्रस्तुति के संदर्भ पर निर्भर हैं, और इसलिए नैतिक सिद्धांतकारों को ऐसे अंतर्ज्ञान पर बहुत अधिक भार डालने से सावधान रहना चाहिए। स्कैनलॉन इस आलोचना को ध्यान में रख सकते हैं, क्योंकि उनका अनुबंधवादी ढांचा लूप के बारे में किसी विशिष्ट निष्कर्ष से जुड़ा नहीं है। लेकिन फिर उन्हें इरादे के महत्व के बारे में अपने सामान्य दावों को स्पष्ट करने के लिए अन्य मामलों को खोजने की आवश्यकता होगी।

4.2. दोष और जिम्मेदारी

जबकि वे अनुमति के लिए प्रासंगिक नहीं हैं, इरादे कार्यों के अर्थ को प्रभावित करते हैं, और इस तरह दूसरों के लिए एजेंट के प्रति प्रतिक्रिया करने के तरीकों को प्रभावित करते हैं। यह हमें स्कैनलॉन की दोष और जिम्मेदारी की चर्चाओं पर लाता है। स्कैनलॉन जिम्मेदारी के दो रूपों में अंतर करता है।

(1) *नैतिक प्रतिक्रिया जिम्मेदारी* तब प्रासंगिक होती है जब हम किसी व्यक्ति से कुछ सकारात्मक या नकारात्मक नैतिक प्रतिक्रियाएँ माँगते हैं - जैसे कि दोष, नाराजगी, प्रशंसा या आभार - उचित हैं। सहज रूप से, "किसी व्यक्ति ने जो किया है, वह ऐसी प्रतिक्रियाओं को तभी उचित बनाता है जब वह व्यक्ति इस तरह से व्यवहार करने के लिए जिम्मेदार था" (स्कैनलॉन 2015, पृष्ठ 89-90)। स्कैनलॉन ने मूल रूप से इसे "जिम्मेदारी के रूप में आरोपण" कहा था, लेकिन वह "नैतिक प्रतिक्रिया जिम्मेदारी" लेबल को प्राथमिकता देने लगा है।

(2) जब हम पूछते हैं कि क्या किसी व्यक्ति के कार्य दूसरों के प्रति उसके दायित्वों को बदलते हैं, और दूसरों के प्रति उनके दायित्व उसके प्रति बदलते हैं, तो *मूल जिम्मेदारी* प्रासंगिक होती है। "वादा करना, कुछ पैसे सौंपना, जोखिम उठाना, या किसी अवसर का लाभ न उठाने का विकल्प चुनना दूसरों के प्रति व्यक्ति के दायित्वों को बदल सकता है, और दूसरों के प्रति उनके दायित्वों को बदल सकता है, अगर व्यक्ति इन चीजों को करने के लिए जिम्मेदार है।" (स्कैनलॉन 2015, पृष्ठ 89-90) हम खंड 10 में मूल जिम्मेदारी के संविदात्मक खाते पर लौटते हैं।

नैतिक प्रतिक्रिया जिम्मेदारी के संविदावादी खाते के लिए केंद्रीय प्रश्न यह है कि "किसी एजेंट को किसी विशेष दृष्टिकोण के साथ पहचाने जाने के लिए क्या सच होना चाहिए, और इस प्रकार प्रशंसा और दोष

जैसी नैतिक प्रतिक्रियाओं के लिए पात्र होना चाहिए"। (कुमार 2015, पृष्ठ 251) पृष्ठभूमि में, निश्चित रूप से, स्वतंत्र इच्छा और नियतिवाद के बारे में पारंपरिक पहलियाँ हैं। क्या एजेंटों को उन कार्यों या दृष्टिकोणों के लिए उचित रूप से दोषी ठहराया जा सकता है जिनके अंतिम कारण उनके नियंत्रण से परे हैं? किसी व्यक्ति का उस चीज़ के लिए नकारात्मक मूल्यांकन करना अनुचित लगता है जिसे वह नियंत्रित नहीं कर सकता। हालाँकि, संविदावादी के लिए, दोष केवल मूल्यांकन से परे है। दोष क्रियाओं के अर्थ और दूसरों के साथ हमारे संबंधों दोनों से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। "दूसरों के साथ हमारी बातचीत का अर्थ इस बात पर निर्भर करता है कि वे उन बातचीत को नियंत्रित करने वाले कारणों के रूप में क्या देखते हैं। ... हमारे पास ऐसे लोगों के प्रति मित्रता या विश्वास का रवैया न रखने के कारण हैं जिनका रवैया हमारे प्रति इन दृष्टिकोणों को अनुचित बनाता है।" (स्कैनलॉन 2015, पृष्ठ 93)

स्कैनलॉन के अनुसार, एक व्यक्ति दोषी है यदि उसका कार्य दूसरों के प्रति उसके दृष्टिकोण के बारे में कुछ ऐसा दर्शाता है जो उसके साथ उनके संबंधों को खराब करता है। मैं आपको दोषी मानता हूँ यदि दोनों (ए) मैं आपको दोषी मानता हूँ, और (बी) मैं आपके साथ अपने रिश्ते को इस तरह से संशोधित करता हूँ कि खराब संबंधों का यह निर्णय उचित है। (स्कैनलॉन 2008, पृष्ठ 128-9) उचित दोष प्रतिक्रियाओं में विश्वास वापस लेना और दोस्ती जैसे विशेष संबंधों में प्रवेश करने या व्यक्ति की परियोजनाओं में मदद करने की तत्परता में कमी शामिल है। (स्कैनलॉन 2015, पृष्ठ 92)

मान लीजिए मुझे पता चलता है कि मेरे करीबी दोस्त जो ने पिछले हफ़्ते की पार्टी में मेरे साथ क्रूर मज़ाक किया था। (स्कैनलॉन 2008, पृष्ठ 129-30) जो के व्यवहार से स्पष्ट रूप से ऐसे रवैये का पता चलता है जो दोस्ती के साथ असंगत हैं। इसलिए मैं यह निष्कर्ष निकाल सकता हूँ कि जो के साथ मेरा रिश्ता खराब है, और अपने रवैये या व्यवहार को उसी के अनुसार समायोजित कर सकता हूँ।

इस प्रकार संविदात्मक दोष केवल दोस्ती या पारिवारिक रिश्तों जैसे रिश्तों के भीतर ही समझ में आता है। उस रिश्ते के भीतर क्या उचित है, इसके मानक के आधार पर हानि का आकलन किया जाना चाहिए। यह एक स्पष्ट समस्या को जन्म देता है। सामान्य नैतिक मामले में दोष के बारे में निर्णय और दोष की प्रतिक्रियाओं का आधार कौन सा रिश्ता हो सकता है? मान लीजिए कि जब मैं सड़क पर चल रहा हूँ तो कोई अजनबी मेरा बैग चुरा लेता है। सहज रूप से, मैं उसे दोषी ठहरा सकता हूँ। लेकिन मेरा उससे क्या रिश्ता है? "क्या हमारा हर उस अजनबी के साथ रिश्ता है जिस पर दोष लगाना समझदारी है?" (स्कैनलॉन 2008, पृष्ठ 138) स्कैनलॉन जवाब देते हैं कि हमारा रिश्ता है।

"अनुबंधवादी दावा करते हैं कि सभी व्यक्ति एक दूसरे के साथ एक विशेष प्रकार के संबंध में खड़े होते हैं, जिसका आदर्श रूप एक विशिष्ट मूल्य, पारस्परिक मान्यता को साकार करता है।" (कुमार 2015, पृष्ठ 258) यह विचार अजीब लगता है अगर हम एक नैतिक संबंध की कल्पना करते हैं जो वास्तविक संबंधों जैसे कि एक विशेष दोस्ती के समान है। इसके बजाय अनुबंधवादी नैतिक संबंध को "एक आदर्श आदर्श, दोस्ती के आदर्श आदर्श की तरह मानते हैं जो उन दृष्टिकोणों और अपेक्षाओं को निर्दिष्ट करता है जो हमें एक दूसरे के बारे में रखने चाहिए। ... नैतिकता की आवश्यकता है कि हम एक दूसरे के प्रति कुछ दृष्टिकोण रखें, केवल इस तथ्य के आधार पर कि हम 'साथी तर्कसंगत प्राणियों' के संबंध में खड़े हैं।" (स्कैनलॉन 2008, पृष्ठ 139-40) कुछ बुनियादी दृष्टिकोण हैं जो हम पूरी तरह से अजनबियों से भी उम्मीद करते हैं, और अगर उनका व्यवहार उन दृष्टिकोणों की कमी को दर्शाता है तो हम उन्हें दोषी ठहराने के हकदार हैं।

संविदावाद के भीतर, एक सार्वभौमिक नैतिक संबंध का विचार अवैयक्तिक निर्णय को एकीकृत करता है कि कोई व्यक्ति उन सिद्धांतों पर कार्य करने में विफल रहा है जिन्हें कोई भी उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता है, उन व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं के साथ जो दोष की विशेषता रखते हैं। मान लीजिए कि मैं आपका बैग चोरी होते देखता हूँ। हम दोनों का मानना है कि आपके साथ गलत हुआ है। ये निर्णय "सामान्य दावे पर आधारित हैं कि एक व्यक्ति के लिए दूसरे व्यक्ति के साथ उस तरह से संबंध बनाना अस्वीकार्य है जिस तरह की स्थिति में हम खुद को पाते हैं।" (कुमार 2015, पृष्ठ 260) लेकिन जब *आप* अपराधी को दोषी ठहराते हैं, तो आप कुछ और अधिक व्यक्तिगत करते हैं, साथ ही "विशेष रूप से आपके प्रति उसके रवैये और आपके रिश्ते के बारे में जो कुछ भी वे कहते हैं, उस पर आपत्ति उठाते हैं।" (कुमार 2015, पृष्ठ 260)

कुछ विश्वासघात इतने गंभीर होते हैं कि वे दोस्ती को खत्म कर देते हैं। रिश्ता टिक नहीं सकता। इसी तरह, नैतिक प्रतिशोधी तर्क देते हैं कि कुछ भयावह कार्य नैतिक रिश्ते को ही तोड़ सकते हैं, व्यक्ति को पारस्परिक मान्यता के दायरे से बाहर कर सकते हैं जो नैतिकता की विशेषता है। संविदावादी असहमत हैं। "यहां तक कि जो लोग दूसरों के प्रति अपने कार्यों की औचित्य के बारे में कोई परवाह नहीं करते हैं, वे अपने मूल नैतिक अधिकारों को बनाए रखते हैं ... उन्हें चोट नहीं पहुंचाई जानी चाहिए या मारा नहीं जाना चाहिए, जब उन्हें सख्त ज़रूरत हो तो उनकी मदद की जानी चाहिए, और हमें उनसे किए गए वादों का सम्मान करना चाहिए।" (स्कैनलॉन 2008, पृष्ठ 142) इसके बजाय, "दोष ... में दूसरों के साथ बातचीत की सीमा में प्रवेश करने की तत्परता का निलंबन शामिल है जो नैतिक रूप से महत्वपूर्ण है लेकिन सभी के लिए बिना शर्त नहीं है"। (स्कैनलॉन 2008, पृ. 142-3) उदाहरण के लिए, मैं किसी अविश्वसनीय व्यक्ति के साथ समझौता करने से इंकार कर सकता हूँ, अन्य विशिष्ट संबंधों में प्रवेश करने से इंकार कर सकता हूँ जिसमें विश्वास और निर्भरता शामिल हो, या उसकी परियोजनाओं को आगे बढ़ाने में स्वेच्छा से सहायता कर सकता हूँ, भले ही मैं ऐसा स्वयं कम लागत पर कर सकता हूँ।

स्कैनलॉन के दोष के संविदात्मक विवरण में स्वतंत्र इच्छा और नियतिवाद के मुद्दों को अलग रखा गया है। क्योंकि दोष वास्तव में किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण की प्रतिक्रिया है, इसलिए यह इस खोज से कम नहीं होता है कि उसका "उन कारकों पर कोई नियंत्रण नहीं था जो उसे उस तरह का व्यक्ति बनाते हैं जो वह है।" (स्कैनलॉन 2008, पृष्ठ 178) भले ही आप कठोर, अविश्वसनीय और अविश्वसनीय होने से बच नहीं सकते, लेकिन मैं आपसे इस तरह का व्यवहार जारी रखने की उम्मीद नहीं कर सकता जैसे कि आपने यह नहीं बताया कि, किसी भी कारण से, *आप इस तरह के व्यक्ति हैं*।

5. अभिसरण तर्क

संविदावाद की समस्याओं पर विचार करने से पहले, हम सबसे पहले इसकी विशिष्टता के लिए चुनौती को संबोधित करते हैं। *ऑन क्लाट मैटर्स* में, डेरेक पारफिट तर्क देते हैं कि नियम परिणामवाद, संविदावाद और कांट के नैतिक सिद्धांत की सर्वोत्तम व्याख्या सभी एक साथ मिलते हैं। इसका परिणाम एक त्रिगुण सिद्धांत है, जिसके अनुसार "कोई कार्य तभी गलत होता है जब ऐसे कार्यों को किसी ऐसे सिद्धांत द्वारा अस्वीकृत किया जाता है जो अनुकूल, अद्वितीय रूप से सार्वभौमिक रूप से इच्छा करने योग्य और उचित रूप से अस्वीकार करने योग्य न हो" (पारफिट 2011, खंड 1, पृष्ठ 413)। चूंकि संविदावाद खुद को परिणामवाद और कांट दोनों के विकल्प के रूप में प्रस्तुत करता है, इसलिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण परिणाम होगा।

अभिसरण तर्क स्पष्ट रूप से स्कैनलॉन के अपने सिद्धांत से नहीं, बल्कि "मैं जो मानता हूँ कि स्कैनलॉनियन संविदावाद का सबसे अच्छा संस्करण है" (पार्फिट 2011, खंड 1, पृष्ठ 412) से संबंधित है। पार्फिट दो प्रमुख 'सुधारों' का बचाव करते हैं, स्कैनलॉन द्वारा नैतिक सिद्धांत को अस्वीकार करने के लिए दिए जा सकने वाले कारणों पर लगाए गए दो प्रतिबंधों को अस्वीकार करते हुए, अर्थात्:

1. "व्यक्तिवादी प्रतिबंध: किसी नैतिक सिद्धांत को अस्वीकार करते समय, हमें केवल अपने लिए और अन्य एकल लोगों के लिए इस सिद्धांत के निहितार्थों की अपील करनी चाहिए" (पार्फिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 193)। या, स्कैनलॉन के अपने शब्दों में: "किसी नैतिक सिद्धांत की औचित्यता केवल उस सिद्धांत और उसके विकल्पों पर आपत्ति करने के लिए व्यक्तियों के कारणों पर निर्भर करती है" (स्कैनलॉन 1999, पृष्ठ 229)।
2. "अवैयक्तिक प्रतिबंध: किसी नैतिक सिद्धांत को अस्वीकार करते समय, हम परिणामों की अवैयक्तिक अच्छाई या बुराई के दावों का सहारा नहीं ले सकते" (पार्फिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 214)। या, स्कैनलॉन के अपने शब्दों में: "अवैयक्तिक मूल्य स्वयं उचित अस्वीकृति के लिए आधार नहीं हैं" (स्कैनलॉन 1999, पृष्ठ 222)।

दूसरे शब्दों में, अभिसरण तर्क स्कैनलॉन के संविदावाद के मूल सूत्रीकरण का स्थान लेता है, जहां अस्वीकृति के सभी कारण विशिष्ट व्यक्तियों की व्यक्तिगत शिकायतें होनी चाहिए, जिसका अधिक अवैयक्तिक संस्करण है।

खंड 2 में, हमने कांटियन और स्कैनलोनियन संविदावाद के बीच कई अंतरों को देखा। इन मतभेदों के बावजूद, पार्फिट का तर्क है कि स्कैनलोनियन संविदावाद कांट की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या के साथ मेल खाता है। कई अध्यायों में फैले एक संचयी तर्क में, पार्फिट का तर्क है कि कांट के नैतिक विचारों की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या निम्नलिखित दावे को जन्म देती है:

कांतीय नियम परिणामवाद: हर किसी को आशावादी सिद्धांतों का पालन करना चाहिए, क्योंकि ये एकमात्र सिद्धांत हैं जिन्हें हर कोई तर्कसंगत रूप से सार्वभौमिक कानून मान सकता है। (पार्फिट 2011, खंड 1, पृष्ठ 411)

भले ही हम कांट और नियम परिणामवाद के अभिसरण को स्वीकार कर लें, फिर भी यह दिखाया जाना बाकी है कि ये आशावादी और विशिष्ट रूप से सार्वभौमिक रूप से इच्छा करने योग्य सिद्धांत ही सिद्धांतों का एकमात्र समूह है जिसे कोई भी व्यक्ति उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता है। अभिसरण तर्क के इस दूसरे चरण में मुख्य चरण यह दावा है कि "जब केवल एक ही प्रासंगिक सिद्धांत होता है जिसे हर कोई तर्कसंगत रूप से चुन सकता है, तो इस सिद्धांत पर किसी की आपत्ति हर विकल्प के लिए सबसे मजबूत आपत्ति जितनी मजबूत नहीं हो सकती है" (पार्फिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 245)।

यह मुख्य दावा स्पष्ट प्रति-उदाहरणों के लिए खुला प्रतीत होता है - ऐसे मामले जहाँ संविदावाद नियम परिणामवाद से अलग प्रतीत होता है। सबसे ज़्यादा चौंकाने वाले वे मामले हैं जहाँ "हम या तो किसी एक व्यक्ति को किसी बड़े बोझ से बचा सकते हैं, या कई अन्य लोगों को बहुत कम लाभ दे सकते हैं, जो सभी बहुत बेहतर स्थिति में हैं" (पार्फिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 246)।

अभिसरण तर्क के समर्थकों को किसी तरह इन स्पष्ट प्रति-उदाहरणों को स्पष्ट करना चाहिए। पारफ़िट का अनुसरण करते हुए, वे पहले ऐसे मामलों को दो वर्गों में विभाजित करेंगे। कुछ मामलों में, अनुकूल नियम परिणामवादी सिद्धांत हमें व्यक्ति का पक्ष लेने का निर्देश देते हैं। स्कैनलॉन के अपने उदाहरण पर विचार करें जहाँ हमें एक निर्दोष व्यक्ति को बिजली से उड़ाने और टेलीविज़न पर प्रसारित होने वाले खेल आयोजन के लाखों लोगों के आनंद को बाधित करने के बीच चयन करना होगा (स्कैनलॉन 1998, पृष्ठ 235)। यहाँ, कई नियम परिणामवादी तर्क देंगे कि अनुकूल नियम हमें निर्दोष व्यक्ति को बचाने का निर्देश देते हैं। यदि ऐसा है, तो नियम परिणामवाद और संविदावाद के बीच अभिसरण सीधा है। नियम परिणामवाद के साथ अपनी प्रतिस्पर्धा में, संविदावाद ऐसे मामलों से अपनी सहज अपील प्राप्त नहीं कर सकता है।

फिर, हमें उन मामलों की ओर मुड़ना चाहिए, जहाँ अनुकूल नियम परिणामवादी सिद्धांत हमें कई अन्य लोगों को छोटे लाभ प्रदान करने का निर्देश देते हैं। यहाँ, अभिसरण तर्क को इस बात से इनकार करना चाहिए कि अकेला व्यक्ति अनुकूल सिद्धांतों को उचित रूप से अस्वीकार कर सकता है। यहीं पर अनुबंधवाद पर पारफ़िट के 'सुधार' अभिसरण तर्क के लिए महत्वपूर्ण हैं। मूल रूप से तैयार किए गए अनुसार, अनुबंधवाद उपयोगितावाद से अलग है, क्योंकि व्यक्ति को अनुकूल सिद्धांतों को अस्वीकार करने की अनुमति देता है, जब भी वे *उस पर* किसी अन्य व्यक्ति पर उसके पसंदीदा सिद्धांत की तुलना में अधिक बोझ डालते हैं। अभिसरण तर्क के समर्थक इसके बजाय अधिक अवैयक्तिक सूत्रीकरण का पक्ष लेंगे। जबकि व्यक्ति की अपनी शिकायत को कम नहीं किया जाता है, अन्य लोग अब उसके सिद्धांत को *अवैयक्तिक* आधार पर अस्वीकार कर सकते हैं - ठीक इसलिए क्योंकि यह सभी की भलाई को अधिकतम करने में विफल रहता है। इन अवैयक्तिक कारणों का सामना करते हुए, अकेला व्यक्ति अनुकूल सिद्धांतों को उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता है।

अपने उत्तेजक दावों के बावजूद, अभिसरण तर्क, एक मामले में, काफी मामूली है। यह यह साबित करने के लिए नहीं है कि नियम परिणामवाद, कांटियन नैतिकता और संविदावाद अनिवार्य रूप से मेल खाते हैं। बल्कि, निष्कर्ष केवल यह है कि तीनों सिद्धांतों के प्रशंसनीय संस्करण *अनिवार्य रूप से* संघर्ष नहीं करते हैं। इस मामूली उद्देश्य के लिए, संविदावाद का एक प्रशंसनीय संस्करण बनाना पर्याप्त होगा, जिस पर आशावादी सिद्धांतों को उचित रूप से अस्वीकार नहीं किया जा सकता है।

यहाँ एक पद्धतिगत मुद्दा है। अभिसरण तर्क की अपनी प्रस्तुति में, पारफ़िट विशिष्ट आदर्शित मामलों के बारे में अंतर्ज्ञान के विरुद्ध संविदावाद के प्रतिस्पर्धी संस्करणों का परीक्षण करता है। यह पारफ़िट की अपनी प्रस्तुति की कोई खासियत नहीं है। इस तरह के अंतर्ज्ञान के बिना, अभिसरण तर्क ज़मीन पर नहीं उतर सकता। संविदावाद के व्यक्तिवादी सूत्रीकरण के समर्थक उत्तर दे सकते हैं कि, कुछ प्रमुख मामलों में, पारफ़िट के अंतर्ज्ञान तटस्थ मानक नहीं हैं, बल्कि परिणामवादी दिमाग के सुविचारित नैतिक निर्णयों को दर्शाते हैं। यह संविदावादियों के लिए बस अपनी बात पर अड़े रहने का रास्ता छोड़ देता है - और तर्क देता है कि उनका दृष्टिकोण मानक स्तर पर, साथ ही साथ मेटा-नैतिक स्तर पर भी विशिष्ट है।

पारफ़िट के पहले के दावे पर टिप्पणी करते हुए कि कांट की सबसे अच्छी व्याख्या नियम परिणामवाद के सबसे अच्छे रूप से मेल खाती है, स्कैनलॉन ने देखा कि "पारफ़िट के निष्कर्ष को किस हद तक आश्चर्यजनक लगना चाहिए, यह एक हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि वे जिन सिद्धांतों पर चर्चा कर रहे हैं, वे कांट के सिद्धांतों के कितने करीब हैं" (स्कैनलॉन 2011, पृष्ठ 117)। इसी तरह की टिप्पणी अभिसरण तर्क पर लागू होती है। संविदावाद की अपील यह है कि यह परिणामवाद और कांटियन

नैतिकता दोनों के लिए एक वास्तविक विकल्प प्रस्तुत करता है। जो लोग संविदावाद की ओर आकर्षित होते हैं, क्योंकि कुछ प्रमुख मामलों में, यह विशिष्ट रूप से गैर-उपयोगितावादी अंतर्ज्ञान के साथ जुड़ता है, वे अभिसरण तर्क में इस्तेमाल किए गए अवैयक्तिक संविदावाद को संविदावाद की मूल प्रतिबद्धताओं का परित्याग मान सकते हैं। तब अभिसरण तर्क सीमित प्रासंगिकता का होगा। हम नीचे इन मुद्दों पर वापस आते हैं, जब हम व्यक्तिगत और अवैयक्तिक प्रतिबंधों पर अधिक विस्तार से विचार करते हैं। (अनुभाग 8, 9 और 13 देखें।)

पार्फिट के अभिसरण तर्क ने उनके या स्कैनलॉन के काम के अन्य पहलुओं की तरह उतना ध्यान आकर्षित नहीं किया है। (एक अपवाद कुमार 2011 है।) हालांकि, संविदावाद और परिणामवाद के बीच संबंध का सामान्य मुद्दा संविदावाद पर कई आपत्तियों के लिए बहुत प्रासंगिक है। यह हमेशा विचार करने लायक है कि क्या संविदावाद नियम परिणामवाद में ढहने के बिना नई चुनौतियों (जैसे एकत्रीकरण, वास्तविक जिम्मेदारी, जोखिम या भविष्य के लोगों) का पर्याप्त रूप से सामना कर सकता है।

6. क्या संविदावाद चक्रीय है या निरर्थक?

इस प्रविष्टि का शेष भाग संविदावाद के लिए समस्या मामलों की जांच करता है। पहले दो संविदावाद की तार्किक संरचना से संबंधित हैं - यह पूछते हुए कि क्या गलत होने का इसका विवरण या तो परिपत्र है या अधूरा है। अगले चार पहली मामले हैं जहाँ संविदावाद की सबसे स्पष्ट व्याख्या अविश्वसनीय परिणाम देती प्रतीत होती है। अंतिम दो ऐसे समूह हैं जिन्हें नैतिकता के दायरे में शामिल किया जाना चाहिए, लेकिन जो संविदावाद द्वारा छोड़े गए प्रतीत होते हैं: जानवर और भविष्य के लोग।

जैसा कि हमने अनुभाग 3.2 में देखा, संविदावाद व्यक्ति की भलाई पर उनके प्रत्यक्ष प्रभाव के अलावा अन्य आधारों पर सिद्धांतों की उचित अस्वीकृति की अनुमति देता है। हालांकि, भलाई से परे कारणों की यह अपील संविदावाद के प्रति एक आम आपत्ति को सामने लाती है - कि उचित अस्वीकृति का पूरा तंत्र निरर्थक है। आपत्ति इस प्रकार है। संविदावाद कहता है कि x गलत है यदि और केवल यदि x को ऐसे सिद्धांतों द्वारा निषिद्ध किया जाता है जिन्हें कोई भी उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता है। कोई भी व्यक्ति किसी सिद्धांत को इस आधार पर उचित रूप से अस्वीकार कर सकता है कि यह गलत कार्यों की अनुमति देता है। इसलिए एक सिद्धांत जिसे कोई भी उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता है वह एक ऐसा सिद्धांत है जो गलत कार्यों की अनुमति नहीं देता है। अगर हम पहले से नहीं जानते कि कौन सी क्रियाएं गलत हैं, तो हम संविदावादी तंत्र का उपयोग नहीं कर सकते। लेकिन अगर हम पहले से जानते हैं कि कौन सी क्रियाएं गलत हैं, तो हमें इसका उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है।

'गलत' के बजाय 'अनुचित' का उपयोग करने पर एक संबंधित आपत्ति है। मान लीजिए, [खंड 3](#) में हमारी पिछली चर्चा के बाद, हम सहमत हैं कि संविदावाद 'क्योंकि यह मेरे साथ अनुचित व्यवहार करता है' को किसी सिद्धांत को अस्वीकार करने के कारण के रूप में गिनने की अनुमति देता है। फिर हम इस चुनौती का सामना करते हैं कि अनुचितता के हमारे निर्णय सभी वास्तविक नैतिक कार्य कर रहे हैं, क्योंकि संविदावाद अब कहता है कि एक सिद्धांत गलत है यदि और केवल यदि यह किसी के साथ अनुचित व्यवहार करता है।

इस आपत्ति का जवाब देने के लिए, संविदावादियों को यह स्पष्ट करना होगा कि 'x गलत है' और 'x अनुचित है' ऐसे दावे क्यों नहीं हैं जो किसी सिद्धांत को अस्वीकार करने के कारण के रूप में सामने आ सकते हैं। उन्हें यह भी प्रदर्शित करना होगा कि भलाई पर सीधे आधारित न होने वाले कारणों को स्वीकार करना हमें 'x गलत है' और 'x अनुचित है' को स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं करता है।

संविदावादी उत्तर गलतता और औचित्य के बीच वैचारिक संबंध की अपील करता है। कोई कार्य गलत है या नहीं, यह न केवल व्यक्तियों पर उसके प्रत्यक्ष प्रभाव पर निर्भर करता है, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करता है कि इसे अनुमति देने वाला सिद्धांत सभी संबंधितों के लिए उचित ठहराया जा सकता है या नहीं। 'क्योंकि यह गलत है' ऐसा कारण नहीं है जिसे संविदावादी तंत्र में डाला जा सकता है, क्योंकि यह ऐसा कुछ नहीं है जो व्यक्तियों के साथ होता है। इसके बजाय, गलतता कुछ ऐसी है जो उसी तंत्र का उपयोग करके व्यक्तियों के कारणों से निर्मित होती है। यही बात 'क्योंकि यह अनुचित है' के लिए भी लागू होती है। खंड 3.2 में पेश किए गए नस्लवादी सिद्धांत के उदाहरण में, मैं सिद्धांत को अस्वीकार करता हूँ, इसलिए नहीं कि यह मेरे साथ कुल मिलाकर अनुचित व्यवहार करता है, बल्कि इसलिए कि यह अनुचित नैतिक भेद पर अवैध रूप से वजन डालता है। मेरी *शिकायत* इस बात की चिंता करती है कि एक सिद्धांत मेरे साथ कैसा *व्यवहार* करता है।

7. क्या संविदावाद बहुत सुव्यवस्थित है? (बहुलवादी चुनौती)

संविदावाद का एक लाभ यह है कि यह नैतिक विचार-विमर्श के लिए प्रासंगिक विचारों की व्यापक श्रेणी को पकड़ सकता है। सभी विचार जो किसी व्यक्ति को प्रस्तावित सिद्धांत पर आपत्ति करने के लिए उचित आधार प्रदान करते हैं, प्रासंगिक हैं। जैसा कि हमने अनुभाग 3.2 में देखा, इन विचारों में व्यक्तिगत कल्याण पर प्रस्तावित सिद्धांत के प्रत्यक्ष (और यहां तक कि अप्रत्यक्ष) प्रभाव से कहीं अधिक शामिल है। विचारों की यह बहुलता फिर भी एक एकल मानक डोमेन या विषय वस्तु द्वारा *एकीकृत है: अनुचितता*।

संविदावाद के कुछ विरोधी इस बात पर आपत्ति करेंगे कि संविदावाद पर्याप्त रूप से बहुलवादी नहीं है। वे गलतता के एकीकृत खाते पर आपत्ति करेंगे। क्या यह संभव है कि हम एक-दूसरे के प्रति जो कुछ भी ऋणी हैं, उससे संबंधित सभी विचार इस बात से एकीकृत हैं कि क्या आचरण की अनुमति देने वाले सिद्धांत को उचित रूप से अस्वीकार किया जा सकता है? सही और गलत कार्यों के बारे में हमारे नैतिक विचार-विमर्श में, क्या सभी नैतिक विचार केवल इस आधार पर प्रासंगिक हैं कि वे कैसे प्रभावित करते हैं कि प्रस्तावित कार्रवाई को लाइसेंस देने वाला सिद्धांत उचित है या नहीं?

उदाहरण के लिए, यह दावा करें कि व्यक्तियों और सामान्य रूप से संवेदनशील प्राणियों पर अनावश्यक पीड़ा पहुँचाना गलत है। कल्पना करें कि कोई व्यक्ति किसी दूसरे को प्रताड़ित कर रहा है। एक उपयोगितावादी इस बात पर आपत्ति करेगा कि, कार्रवाई की गलतता के बारे में हमारी समझ में, सबसे प्रमुख तथ्य यह है कि व्यवहार अनावश्यक पीड़ा पहुँचाएगा। यह इस तथ्य से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति ऐसे आचरण की अनुमति देने वाले सिद्धांत को उचित रूप से अस्वीकार कर सकता है। उपयोगितावादी यह निष्कर्ष निकालता है कि नैतिकता मूल रूप से पीड़ा से बचने के बारे में

है। इसके बजाय एक *बहुलवादी* यह निष्कर्ष निकालेगा कि नैतिकता अपरिवर्तनीय रूप से बहुल है - कुछ नैतिक कारण औचित्य पर आधारित हैं, लेकिन अन्य सीधे पीड़ा या आनंद पर आधारित हैं।

संविदावादी जवाब देते हैं कि यातना के मामले में सबसे नैतिक रूप से प्रासंगिक यह है कि पीड़ा *किसी दूसरे की एजेंसी के माध्यम से* लाई जाती है - न कि केवल यह कि पीड़ा होती है। यही कारण है कि बिजली गिरने से समान चोटों को सहने की तुलना में यातना देना नैतिक रूप से बहुत बुरा है - पहला मेरे मानवीय सम्मान का अपमान है जबकि दूसरा नहीं है। अगर हम सहमत हैं कि यह वास्तव में महत्वपूर्ण तथ्य है, तो लाभ अब संविदावादी के पास है, जिसका नैतिक सिद्धांत स्पष्ट रूप से एजेंसी की धारणा को केंद्रीय स्थान देता है। (हमेशा की तरह, द्वंद्वात्मकता जारी रह सकती है, क्योंकि उपयोगितावादी जवाब दे सकते हैं कि यातना नैतिक रूप से बिजली गिरने से भी बदतर है क्योंकि इसमें परोपकार की घोर विफलता शामिल है)। नैतिकता के एक आधारभूत परिणामवादी खाते (जैसे उपयोगितावाद) के लिए, कार्रवाई की गलतता पूरी तरह से और सीधे उस पीड़ा पर आधारित होती है जो इससे होगी। इस तरह के विवरण के विरुद्ध, संविदावादी तर्क देते हैं कि कल्याण को बढ़ावा देने का नैतिक महत्व हमेशा प्रासंगिक सिद्धांत की औचित्यता पर इसके प्रभाव के माध्यम से मध्यस्थ होता है: यदि कोई कार्य किसी के कल्याण के लिए पर्याप्त चिंता दिखाने में विफल रहता है, तो उस व्यक्ति के पास सिद्धांत पर आपत्ति करने के लिए मजबूत आधार है।

इसके अलावा, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि संविदावाद 'उचित रूप से अस्वीकार कर सकता है' में काम करता है, न कि 'अस्वीकार करता है' में। संविदावाद यह नहीं कहता कि *जब तक* कोई इस पर आपत्ति नहीं करता, तब तक बिना वजह पीड़ा पहुँचाना गलत नहीं है, या यह कि बिना वजह पीड़ा पहुँचाना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा, *अगर* कोई इस पर आपत्ति नहीं करता। इस तथ्य के बारे में कुछ भी आकस्मिक नहीं है कि बिना वजह पीड़ा पहुँचाने का कोई विशेष कार्य गलत है। बल्कि, बिना वजह पीड़ा पहुँचाना हमेशा आंतरिक रूप से गलत होता है - क्योंकि यह (हमेशा और हर जगह) ऐसी चीज़ है जो उचित अस्वीकृति के लिए आधार प्रदान करती है।

इस प्रकार संविदावाद और परिणामवाद एक ही आचरण के बारे में आपत्तिजनक बातों को अलग-अलग तरीकों से स्पष्ट करते हैं। संविदावाद के खिलाफ़ निर्णायक अंतर्ज्ञान के बजाय, हमारे पास विशिष्ट अंतर्ज्ञान का मामला है, जहाँ अलग-अलग सिद्धांतकार, अलग-अलग सहज ज्ञान युक्त शुरुआती बिंदुओं से शुरू होकर, अलग-अलग सैद्धांतिक प्राथमिकताओं के साथ समाप्त होते हैं।

8. क्या संविदावाद वास्तव में एकत्रीकरण से बच सकता है?

हमने पहले देखा कि उपयोगितावाद के विपरीत, संविदावाद एकत्रीकरण को अस्वीकार करता है। हालाँकि, कुछ मामले ऐसे भी हैं जहाँ एकत्रीकरण के प्रति संविदावाद की घृणा अवांछनीय परिणामों की ओर ले जाती है। (एकत्रीकरण के प्रति संविदावादी प्रतिक्रियाओं की विविधता के लिए, रीबेटान्ज़ 1998, नॉरक्रॉस 2002, कुमार 2011, फ्राइड 2012a देखें। अनुभाग 9 और 12 भी देखें, क्योंकि संविदावादी और उनके विरोधी अक्सर मांग या जोखिम के साथ एकत्रीकरण पर चर्चा करते हैं।)

जॉन टॉरेक (टॉरेक 1977) के एक प्रसिद्ध लेख से ली गई निम्नलिखित स्थिति पर विचार करें।

चट्टानों। छह मासूम तैराक आने वाली ज्वार की वजह से दो चट्टानों पर फंस गए हैं। पांच तैराक एक चट्टान पर हैं, जबकि आखिरी तैराक दूसरी चट्टान पर है। अगर उन्हें बचाया नहीं गया तो हर तैराक डूब जाएगा। आप ड्यूटी पर अकेले लाइफ-गार्ड हैं। आपके पास अपनी गश्ती-नाव में एक चट्टान तक पहुंचने और उस पर मौजूद सभी लोगों को बचाने का समय है। चट्टानों के बीच की दूरी और ज्वार की गति के कारण, आप समय पर दोनों चट्टानों तक नहीं पहुंच सकते। आपको क्या करना चाहिए?

मान लीजिए आप दूसरी चट्टान पर अकेले तैराक को बचाने का फैसला करते हैं। सहज रूप से, यह गलत लगता है। निश्चित रूप से आपको एक के बजाय पाँच लोगों को बचाना चाहिए था। संविदावाद के लिए चुनौती यह है कि आपने जो किया वह गलत क्यों है। उपयोगितावादियों के पास एकत्रीकरण के आधार पर एक सीधा उत्तर है। आपको एक के बजाय पाँच लोगों को बचाना चाहिए क्योंकि पाँच मौतें एक मौत से भी बदतर परिणाम हैं। यह मामला संविदावाद के लिए पेचीदा है क्योंकि यह एकत्रीकरण को अस्वीकार करता है। पाँचों लोग प्रत्येक उस सिद्धांत को अस्वीकार करना चाहेंगे जो आपको एक को बचाने की अनुमति देता है, इस तथ्य का हवाला देकर कि ऐसा सिद्धांत उन्हें मरने के लिए छोड़ देता है। लेकिन दूसरी चट्टान पर अकेला व्यक्ति किसी भी सिद्धांत को अस्वीकार करना चाहेगा जो आपको पाँचों को बचाने की अनुमति देता है। और सिद्धांत पर आपत्ति करने का कारण प्रत्येक मामले में बिल्कुल एक जैसा है - यह सिद्धांत उस व्यक्ति को मरने के लिए छोड़ देता है। पाँचों लोग इस तथ्य का हवाला नहीं दे सकते कि उनमें से अधिक लोग हैं - क्योंकि यह कोई व्यक्तिगत कारण नहीं है। (मान लीजिए कि आप पाँच में से एक हैं। यह तथ्य कि चार अन्य लोग मरेंगे, ऐसी बात नहीं है जिस पर आप आपत्ति कर सकें, क्योंकि यह आपके साथ नहीं हुआ है।) इसलिए ऐसा लगता है कि हम एक गतिरोध पर पहुँच गए हैं - और शायद सबसे अच्छा समाधान (वह सिद्धांत जिसे कोई भी उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता) एक सिक्का उछालना है। इस तरह, छह लोगों में से प्रत्येक को बचने का पचास-पचास मौका मिलता है। कोई भी इस सिद्धांत को इस आधार पर उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता है कि यह उन्हें बचने का केवल पचास-पचास मौका देता है, क्योंकि कोई भी विकल्प किसी को और भी कम मौका देता है। सिक्का उछालना एकमात्र सिद्धांत है जो सभी को कम से कम पचास-पचास मौके की गारंटी देता है। इसलिए यह एकमात्र सिद्धांत है जिसे कोई भी उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता है।

एक संविदावादी प्रतिक्रिया यह है कि गोली को काटें और स्वीकार करें कि सिक्का उछालना सही उत्तर है। हालाँकि, कई संविदावादी इस अंतर्ज्ञान को पकड़ना चाहते हैं कि आपको पाँचों को बचाना चाहिए। याद रखें कि किसी सिद्धांत को अस्वीकार करने का एक एजेंट का कारण, उसके कल्याण पर इसके प्रभाव पर आधारित नहीं हो सकता है, बल्कि इस बात पर आधारित हो सकता है कि वह सिद्धांत उसके बारे में क्या कहता है या उसके साथ कैसा व्यवहार करता है। कल्पना करें कि पहली चट्टान पर पाँच तैराकों में से एक इस प्रकार तर्क कर रहा है: “यदि प्रत्येक चट्टान पर एक व्यक्ति है, तो सिक्का उछालना स्पष्ट रूप से सही सिद्धांत है, क्योंकि यह उनके प्रतिस्पर्धी कारणों को संतुलित करता है। यदि आप उसी सिद्धांत को तब लागू करते हैं जब इस चट्टान पर पाँच लोग होते हैं, तो आप कह रहे हैं कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि पाँच हैं या एक नहीं। तो आप बिल्कुल वैसा ही व्यवहार कर रहे हैं जैसे कि मैं यहाँ नहीं था, इस जीवन और मृत्यु की स्थिति का सामना कर रहा हूँ। एक सिद्धांत जो आपको - वास्तव में - इस तरह से मेरी दुर्दशा को अनदेखा करने की अनुमति देता है, वह मेरे प्रति सम्मान नहीं दिखाता है। यदि प्रत्येक चट्टान पर एक व्यक्ति होता, तो बचाए जाने के उनके दावे रद्द हो जाते। इसलिए हम फिर देखते हैं कि क्या दोनों चट्टानों पर अन्य लोग हैं। ऐसे कई लोग हैं, और मैं उनमें से एक हूँ।”

बचाए जाने का मेरा दावा बेबुनियाद है। इसलिए आपको पाँचों को बचा लेना चाहिए।" (इस तर्क की आलोचना के लिए, ओत्सुका 2001 देखें।)

संविदावाद के लिए एक और मुश्किल मामला वह है, जहाँ अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा झेले जाने वाले बोझ असमान होते हैं - और इसलिए एक-दूसरे को संतुलित नहीं कर सकते और एक-दूसरे को रद्द नहीं कर सकते - लेकिन फिर भी प्रत्येक मामले में बहुत गंभीर होते हैं। निम्नलिखित उदाहरण डेरेक पार्फिट द्वारा संविदावाद और एकत्रीकरण (पार्फिट 2003) की चर्चा से सुझाया गया है। दो परिदृश्यों के बीच एक विकल्प पर विचार करें। पहले में, एक व्यक्ति सौ साल तक पीड़ा सहता है; जबकि दूसरे में दस लाख लोग सौ साल से एक दिन कम करके पीड़ा सहते हैं। पीड़ा का एक अतिरिक्त दिन एक बड़ा बोझ है। इसलिए यदि हम शामिल एकल व्यक्तियों के परिप्रेक्ष्य से स्थिति पर विचार करते हैं, तो ऐसा लगेगा कि पहले व्यक्ति की शिकायत ('मैं सौ साल तक पीड़ा सहूँगा') किसी भी अन्य एकल व्यक्ति की शिकायत ('मैं सौ साल से एक दिन कम करके पीड़ा सहूँगा') से अधिक है। हालांकि, एक उपयोगितावादी तर्क देगा कि, इस मामले में, दूसरा परिदृश्य बदतर है।

उपयोगितावादी यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि, जबकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसके व्यक्तिगत दृष्टिकोण से स्वीकार्य परिदृश्य चुनने का यह आदर्श अत्यंत आकर्षक है, यह हमेशा प्राप्त करने योग्य नहीं होता है। विशेष रूप से, यह आदर्श तब व्यावहारिक नहीं होता जब हम कम से कम एक व्यक्ति पर भारी बोझ डालने से बच नहीं सकते। संविदावाद प्रत्येक व्यक्ति के दिमाग को खुद पर और अन्य व्यक्तियों पर लगाए गए बोझ पर केंद्रित करता है - और हमें अपने बोझ को वापस लेने के लिए आमंत्रित करता है यदि हम देखते हैं कि अन्य व्यक्ति एक प्रतिस्पर्धी सिद्धांत के तहत बहुत अधिक पीड़ित हैं। हालांकि, हमारे वर्तमान उदाहरण में, दूसरे परिदृश्य में प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण से स्थिति को अस्वीकार्य पाएगा, केवल इसलिए कि इसमें शामिल पीड़ा की भयावहता है। यह प्रशंसनीय नहीं है कि वे अपनी शिकायत वापस ले लें क्योंकि पहले परिदृश्य में व्यक्ति को थोड़ा अधिक बोझ सहना पड़ता है। यह तर्क दिया जा सकता है कि ऐसे मामलों में हमें उन व्यक्तियों की संख्या को आंतरिक नैतिक भार देना चाहिए जो गंभीर बोझ सहते हैं और इस तरह उन व्यक्तियों की संख्या को कम करना चाहिए जिनके लिए स्थिति अस्वीकार्य है।

संविदावादी के पास कई संभावित उत्तर हैं। वे उपयोगितावादी के अंतर्ज्ञान को नकार सकते हैं। शायद किसी एक व्यक्ति पर अधिक बोझ डालना गलत है, भले ही कई अन्य लोगों को थोड़े अधिक बोझ से बचाने के लिए। संविदावादी जो उपयोगितावादी के अंतर्ज्ञान को समझना चाहते हैं, वे तर्क दे सकते हैं कि, जैसे शिकायतें हमेशा भलाई से जुड़ी नहीं होती हैं, वैसे ही किसी व्यक्ति की शिकायत की ताकत भलाई के नुकसान के समानुपातिक नहीं होनी चाहिए। शायद एक सिद्धांत जो मुझे एक दिन घटाकर एक सदी तक पीड़ित रहने की अनुमति देता है, मेरे लिए उतना ही आपत्तिजनक है जितना कि एक सिद्धांत जो मुझे एक सदी तक पीड़ित रहने की अनुमति देता है। एक बार जब शिकायतें बराबर हो जाती हैं, तो हम अपनी पिछली टाई-ब्रेकिंग विधि का सहारा ले सकते हैं, और निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कई के मुकाबले एक को तरजीह देना गलत है। (उपयोगितावादी जवाब देगा कि किसी भी संदर्भ में पीड़ा का एक दिन एक बहुत बड़ा नैतिक बोझ है - यह कम बुरा नहीं है अगर व्यक्ति पहले से ही लगभग एक सदी से पीड़ित है - इसलिए पहले परिदृश्य में व्यक्ति की शिकायत को दूसरे परिदृश्य में किसी भी व्यक्ति की शिकायत से काफी अधिक माना जाना चाहिए।)

ऑन व्हाट मैटर्सकि अध्याय 21 में, पारफिट आगे के तर्क प्रस्तुत करते हैं जिन्हें व्यक्तिवादी प्रतिबंध के खिलाफ़ इस्तेमाल किया जा सकता है - जो किसी सिद्धांत को अस्वीकार करने के आधार को एकल लोगों के लिए इसके निहितार्थों तक सीमित करता है। सबसे पहले, पारफिट कई मामलों को प्रस्तुत करते हैं, जहाँ, उनका तर्क है, "कोई भी संविदावाद जो व्यक्तिवादी प्रतिबंध को शामिल करता है, उसे लाभ और बोझ के वितरण के बारे में सभी संभावित विचारों के साथ संघर्ष करना चाहिए" (पारफिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 198)। एक प्रतिनिधि मामला निम्नलिखित है (पारफिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 199-200):

केस छह: एकमात्र संभावित विकल्प ये हैं:

	ब्लू की आयु होगी:	अन्य लोगों में से प्रत्येक व्यक्ति निम्नलिखित तक जीवित रहेगा:
हम कुछ नहीं करते	30	30
हम ए	70	30
हम बी करते हैं	35	35

पारफिट का अनुसरण करते हुए, उपयोगितावादी इस बात पर आपत्ति करेंगे कि, यदि हम व्यक्तिवादी प्रतिबंध का समर्थन करते हैं, तो "हमें ब्लू को 5 वर्ष और जीवन देने के बजाय ब्लू को 40 वर्ष और जीवन देना चाहिए और इनमें से दस लाख अन्य लोगों को भी। ... यह स्पष्ट रूप से गलत है" (पारफिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 200)।

दूसरा, पारफिट एक नया तर्क प्रस्तुत करता है कि, जब व्यक्तिवादी प्रतिबंध संविदावादी को सही निष्कर्ष पर पहुंचने में सक्षम बनाता है, तो वह सही कारणों से ऐसा नहीं कर सकता है। निम्नलिखित मामले पर विचार करें (पारफिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 196):

केस तीन: एकमात्र संभावित विकल्प ये हैं:

	भविष्य में दर्द भरे दिन	
	नीले रंग के लिए:	कुछ अन्य लोगों में से प्रत्येक के लिए:
हम कुछ नहीं करते	100	10
हम ब्लू का इलाज करते हैं	0	10
हम दूसरों का इलाज करते हैं	100	0

यहाँ, उपयोगितावादी कहते हैं कि, यदि अन्य लोगों की संख्या दस से अधिक है, तो हमें दूसरों का इलाज करना चाहिए, क्योंकि इससे कुल कल्याण अधिकतम होता है। पारफिट का तर्क है कि "हममें से अधिकांश लोग इस उपयोगितावादी दावे को अस्वीकार कर देंगे, इसके बजाय यह मानेंगे कि हमें ब्लू को उसकी बड़ी परीक्षा से बचाना चाहिए। हम यह भी मान सकते हैं कि हमें ब्लू को उसके 100 दिनों के

दर्द से बचाना चाहिए, बजाय इसके कि ऐसे अन्य लोगों को उनके 10 दिनों के दर्द के बहुत छोटे बोझ से बचाया जाए " (पार्फिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 196-7)।

व्यक्तिवादी प्रतिबंध इस मामले में संविदावाद को उपयोगितावाद से अलग करने में सक्षम बनाता है। क्योंकि अन्य लोगों के कारणों को एकत्र नहीं किया जा सकता है, वे कभी भी ब्लू के कारणों से अधिक नहीं हो सकते। लेकिन व्यक्तिवादी प्रतिबंध के विरोधी इस पर आपत्ति करेंगे कि यह एक संयोग है। ब्लू के साथ व्यवहार करने का वास्तविक कारण यह नहीं है कि अन्यथा ब्लू का बोझ अधिक होगा, बल्कि इसलिए कि अन्यथा ब्लू बहुत अधिक बदतर स्थिति में होगा। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि अगर हम कुछ नहीं करते हैं, तो हर कोई (ब्लू सहित) 100 दिनों तक दर्द सहेगा [यह पार्फिट का *केस चार* है]। अब हमें ब्लू को उसके *सभी* 100 दिनों से मुक्त करने या सभी को (ब्लू सहित) उनके 100 दिनों में से 10 दिनों के दर्द से मुक्त करने के बीच चयन करना होगा। जो लोग संविदावाद के अधिक अवैयक्तिक सूत्रीकरण के पक्षधर हैं, वे इस बात पर आपत्ति करेंगे कि व्यक्तिवादी प्रतिबंध हमें पूर्व करने का निर्देश देना चाहिए। "और [यह निष्कर्ष] स्पष्ट रूप से गलत है" (पार्फिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 202)।

केस चार और छह में, व्यक्तिवादी प्रतिबंध के विरोधी तर्क देंगे कि हम केवल दूसरे लोगों को उनकी व्यक्तिगत शिकायतों को एक साथ रखने की अनुमति देकर ही सही परिणाम प्राप्त कर सकते हैं - अन्यथा, वे ब्लू को खारिज करने की उम्मीद नहीं कर सकते। जो लोग इस अंतर्ज्ञान को आकर्षक पाते हैं, वे निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि संविदावादियों को व्यक्तिवादी प्रतिबंध को छोड़ देना चाहिए, और इसके बजाय केस तीन को यह कहकर समायोजित करना चाहिए कि "लोगों के पास मजबूत नैतिक दावे हैं, और कुछ सिद्धांतों को अस्वीकार करने के लिए मजबूत आधार हैं, ये लोग जितने बुरे हैं" (पार्फिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 202)। अन्य संविदावादी यहाँ गोली खाने के लिए तैयार हो सकते हैं, या इन अंतर्ज्ञानों को समायोजित करने के लिए वैकल्पिक तरीके खोज सकते हैं, इस आधार पर कि व्यक्तिवादी प्रतिबंध संविदावाद की एक आवश्यक विशेषता है, जिसके बिना संविदावाद उपयोगितावाद की चरम और अलगावकारी मांगों से बचने की उम्मीद नहीं कर सकता है - अगले खंड का विषय।

9. संविदावाद क्या मांग करता है?

निष्पक्ष सिद्धांतों पर अक्सर अनुचित रूप से मांग करने का आरोप लगाया जाता है। उदाहरण के लिए, इस तथ्य पर विचार करें कि दुनिया में बहुत से जरूरतमंद लोग हैं। विभिन्न प्रकार की सहायता एजेंसियां, जो वर्तमान में निजी व्यक्तियों से दान पर निर्भर हैं, इन जरूरतों को पूरा कर सकती हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सरकारें, बहुराष्ट्रीय कंपनियां और अन्य लोग जितना कर सकते हैं, उससे कहीं अधिक कर सकते हैं। लेकिन सवाल अभी भी बना हुआ है: ऐसी तत्काल जरूरतों का सामना करते हुए, जिनमें से कम से कम कुछ को मैं तुलनात्मक रूप से कम लागत पर पूरा कर सकता हूँ, मुझे एक व्यक्ति के रूप में कैसे कार्य करना चाहिए?

निष्पक्ष नैतिक सिद्धांत अक्सर इस प्रश्न का बहुत ही कठिन उत्तर देते हैं। उपयोगितावाद के लिए यह देखना सबसे आसान है। उपयोगितावाद मुझे बताता है कि मुझे अपने डॉलर को वहाँ लगाना चाहिए जहाँ वे सबसे अधिक लाभ पहुँचाएँ। एक प्रतिष्ठित सहायता एजेंसी के हाथों में, मेरा डॉलर एक बच्चे को अपंग करने वाली बीमारी से बचा सकता है, और इसलिए मुझे इसे सहायता एजेंसी को दान करने के लिए बाध्य होना चाहिए। मुझे अपना अगला डॉलर किसी सहायता एजेंसी को देना चाहिए, और मुझे तब

तक दान करते रहना चाहिए जब तक कि मैं उस बिंदु पर न पहुँच जाऊँ जहाँ मेरी अपनी बुनियादी जरूरतें, या डॉलर कमाते रहने की मेरी क्षमता, खतरे में न पड़ जाए। मेरी अधिकांश वर्तमान गतिविधियाँ बंद करनी होंगी। न ही मेरा बलिदान केवल वित्तीय होगा। उपयोगितावाद के अनुसार, मुझे अपना समय भी वहीं लगाना चाहिए जहाँ यह सबसे अधिक लाभ पहुँचाए। मुझे अपनी सारी ऊर्जा, साथ ही अपना सारा पैसा सहायता कार्य में लगाना चाहिए।

शायद हम ऐसे किसी व्यक्ति की प्रशंसा करेंगे जो इस तरह से व्यवहार करता है। लेकिन क्या यह दावा करना उचित है कि हममें से जो ऐसा नहीं करते वे गलत काम करने के दोषी हैं; या यह कि हमारा नैतिक दायित्व है कि हम अपने सभी संसाधनों को दान में लगा दें? ऐसे निष्कर्ष कई लोगों को बेतुके लगते हैं। इससे आम आपत्ति यह होती है कि उपयोगितावाद अनुचित रूप से मांग करता है, क्योंकि यह एजेंट को अपनी परियोजनाओं या हितों के लिए बहुत कम जगह (समय, संसाधन, ऊर्जा) देता है।

यह उपयोगितावाद के लिए एक गंभीर आपत्ति है। यदि संविदावाद इसी तरह के भाग्य से बच सकता है, तो यह एक महत्वपूर्ण लाभ होगा। लेकिन क्या संविदावाद उपयोगितावाद से कम मांग वाला है? यह निश्चित रूप से संभव लगता है कि संविदावाद बहुत मांग वाले सिद्धांत उत्पन्न करेगा, क्योंकि भूख से मर रहे लोगों के लिए किसी भी सिद्धांत को अस्वीकार करना उचित लगता है जो मुझे उनकी सबसे बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के बजाय अनावश्यक संसाधनों को बनाए रखने की अनुमति देता है। मैं तब तक कुछ गलत कर रहा हूँ जब तक कि मैं दूसरों के जीवन को बचाने के लिए वह सब कुछ नहीं करता जो मैं कर सकता हूँ - कम से कम तब तक जब तक मैं उस स्तर तक नहीं पहुँच जाता जिसके नीचे मैं अपनी भलाई के आवश्यक घटकों को छोड़ रहा हूँ।

अनुबंधवाद के लिए एक समान समस्या थॉमस नेगल द्वारा प्रस्तुत की गई है, जो तर्क देते हैं कि, दुनिया की वर्तमान स्थिति में, ऐसे सिद्धांतों का निर्माण करना असंभव हो सकता है जिन्हें कोई भी उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता है। सहायता का कोई भी संभावित सिद्धांत या तो संपन्न लोगों पर अनुचित मांग करेगा (उनके दृष्टिकोण से), या निराश्रितों की बुनियादी जरूरतों पर अपर्याप्त ध्यान देगा (उनके दृष्टिकोण से)। यदि उचित अस्वीकृति की धारणा कम से कम आंशिक रूप से एजेंट के अपने दृष्टिकोण से निर्धारित होती है, तो किसी भी सिद्धांत को किसी के द्वारा उचित रूप से अस्वीकार कर दिया जाएगा। (नेगल 1991 और 1999)।

संविदावादी उत्तर दे सकते हैं कि सहायता के सिद्धांत कुछ पृष्ठभूमि अधिकारों को पूर्व निर्धारित करते हैं, जो मुझे मेरे अपने संसाधनों के मुफ्त उपयोग की गारंटी देते हैं। इससे दो समस्याएँ पैदा होती हैं। पहली यह कि, इस तथ्य से कि मेरे पास कुछ है, इसका यह अर्थ नहीं है कि मुझे इसे देने का दायित्व नहीं है। सबसे अधिक जो हो सकता है वह यह है कि दूसरे मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। दूसरी समस्या यह है कि, यदि हमारा समग्र सिद्धांत संविदावादी है, तो संपत्ति के अधिकारों को भी संविदावादी औचित्य दिया जाना चाहिए। हमें संपत्ति अधिकारों की एक ऐसी प्रणाली की आवश्यकता है जिसे कोई भी उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता। कोई भी प्रणाली जहाँ संपत्ति के अधिकार बहुत असमान रूप से वितरित किए जाते हैं, उसे वे लोग अस्वीकार कर देंगे जो इससे चूक जाते हैं।

संविदावाद इस मांगपूर्ण आपत्ति का उत्तर कैसे दे सकता है? किसी भी निष्पक्ष नैतिक सिद्धांत की तरह, संविदावाद भी इस पर आपत्ति कर सकता है, और तर्क दे सकता है कि नैतिकता बहुत मांगपूर्ण है।

संविदावादी तंत्र बताता है कि नैतिकता *क्यों* मांगपूर्ण है - अगर हम इस तरह से कार्य करना चाहते हैं कि हम दूसरों को उचित ठहरा सकें, तो हमें ऐसे सिद्धांतों को अपनाना चाहिए जिन्हें कोई भी उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता। दुनिया की स्थिति को देखते हुए, ये सिद्धांत उन लोगों के लिए बहुत मांगपूर्ण लगेंगे जो समृद्ध हैं - लेकिन विकल्प ऐसे सिद्धांत होंगे जो सबसे खराब स्थिति वाले लोगों पर और भी अधिक बोझ डालते हैं।

उदाहरण के लिए, स्कैनलॉन स्वयं संविदावादी तर्क के माध्यम से निम्नलिखित सिद्धांत पर पहुँचते हैं:

बचाव सिद्धांत:

यदि हम थोड़ा या मध्यम त्याग करके किसी के साथ कुछ बहुत बुरा घटित होने से रोक सकते हैं, तो ऐसा न करना गलत होगा (स्कैनलॉन 1998, पृष्ठ 224)।

यह सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण मांग कर सकता है, खासकर अगर हम लगातार ऐसी परिस्थितियों का सामना कर रहे हों जहाँ एक छोटा सा बलिदान किसी की जान बचा सकता है। अगर मेरा बलिदान उस बहुत बुरी चीज़ से बहुत कम है जिसे मैं रोकता हूँ, तो यह देखना मुश्किल है कि मैं इस सिद्धांत को कैसे उचित रूप से अस्वीकार कर सकता हूँ।

इससे भी अधिक विवादास्पद बात यह है कि हममें से एक ने पहले यह तर्क दिया था कि समरूप तर्क, और भी अधिक चुनौतीपूर्ण सिद्धांत की ओर ले जाता है।

कठोर सिद्धांत:

यदि हम कोई बड़ा त्याग करके (जैसे, अपनी आय का अधिकांश हिस्सा सहायता एजेंसियों को दे देना और अपना अधिकांश खाली समय चुनाव प्रचार और धन-संग्रह पर खर्च कर देना) किसी के साथ कुछ बहुत बुरा होने से रोक सकते हैं, तो ऐसा न करना गलत होगा (एशफोर्ड 2003, पृष्ठ 287)।

अगर 'महान बलिदान' फिर भी 'बहुत बुरी बात' से कम बुरा है, तो यह देखना मुश्किल है कि मैं इस सिद्धांत को कैसे उचित रूप से अस्वीकार कर सकता हूँ। अगर 'बहुत बुरी बात' एक दर्दनाक मौत है, तो यह सिद्धांत वास्तव में बहुत मांग वाला हो सकता है।

यह तर्क दिया जा सकता है कि भले ही यह कठोर सिद्धांत संविदावाद से निकलता हो, लेकिन यह सिद्धांत के लिए कोई समस्या नहीं है। शायद, दुनिया की वर्तमान स्थिति में, हमें प्रत्येक व्यक्ति की समान नैतिक स्थिति पर आधारित किसी भी नैतिक सिद्धांत की अपेक्षा करनी चाहिए जो अत्यधिक मांग वाला हो, यह देखते हुए कि यदि जरूरतमंद लोगों की मदद नहीं की जाती है तो उन पर कठोर और अपरिवर्तनीय प्रभाव पड़ता है, और यह तथ्य कि इस स्थिति में लगातार बहुत से लोग हैं (एशफोर्ड 2003, पृष्ठ 292-2)।

हालांकि, कई नैतिक दार्शनिक - जिनमें अनुबंधवादी भी शामिल हैं - एक अधिक उदार नैतिक सिद्धांत की तलाश करते हैं। यदि अनुबंधवाद को अत्यधिक मांग से बचना है, तो चुनौती कठोर सिद्धांत से कम पर ही रुकना है। हमें एक ऐसा सिद्धांत खोजने की आवश्यकता है जो मुझे किसी और के लिए (काफी) अधिक अच्छे के बजाय अपने स्वयं के कम अच्छे को चुनने की अनुमति देता है - और फिर यह दिखाने के लिए कि इस सिद्धांत को उचित रूप से अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि मैं अपनी खाली शाम (और अतिरिक्त आय) को किसी चैरिटी को समय और पैसा दान करने के बजाय फिल्मों में बिताता हूँ, जो इस तरह किसी की जान बचा सकता था। हमें इस बात का

स्पष्टीकरण चाहिए कि इसके परिणामस्वरूप मरने वाले लोग इस व्यवहार की अनुमति देने वाले सिद्धांत को उचित रूप से अस्वीकार क्यों नहीं कर सकते।

सबसे आशाजनक उत्तर, एक बार फिर, इस संभावना में निहित है कि किसी सिद्धांत को अस्वीकार करने के मेरे आधार आवश्यक रूप से मेरे कल्याण पर इसके प्रत्यक्ष प्रभाव तक ही सीमित नहीं हैं। मैं किसी ऐसे सिद्धांत को अस्वीकार कर सकता हूँ जिसके लिए मुझे अपना सारा समय और ऊर्जा दान में लगानी पड़ती है, न केवल इसलिए कि यह मुझ पर बोझ डालता है बल्कि इसलिए कि, मुझे अपनी व्यक्तिगत परियोजनाओं के लिए कोई जगह नहीं देकर, यह एक व्यक्ति के रूप में मेरा सम्मान करने में विफल रहता है। (निराश्रित व्यक्ति उत्तर देगा कि मुझे उसे भूखा मरने देने की अनुमति देने वाला सिद्धांत एक व्यक्ति के रूप में उसका सम्मान करने में विफल रहता है। अनुबंधवादी के लिए चुनौती इन दो शिकायतों में अंतर करना है। एक प्रयास के लिए, कुमार 2000 देखें।)

अभिसरण तर्क की पारफिट की प्रस्तुति और व्यक्तिवादी तथा अवैयक्तिक प्रतिबंधों की उनकी आलोचना पर प्रतिक्रिया देते हुए, स्कैनलॉन ने कहा कि, क्योंकि यह उन प्रतिबंधों को अस्वीकार करता है, इसलिए संविदावाद का कोई भी अवैयक्तिक सुधार संविदावाद के मूल निर्माण की तुलना में बहुत अधिक मांग वाला है (स्कैनलॉन 2011)। इस आरोप का एक विशेष द्वंद्वात्मक महत्व है, क्योंकि नियम परिणामवादी अक्सर अपने सिद्धांत को कार्य परिणामवाद की चरम मांगों के लिए अधिक उदार विकल्प के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यदि यह उन प्रतिबंधों को बरकरार रखता है, तो संविदावाद हमेशा इन वैकल्पिक सिद्धांतों की तुलना में कम मांग वाला होगा - भले ही इसकी मांगें सामान्य नैतिकता की अपेक्षा से अधिक हों।

10. मूल उत्तरदायित्व का संविदावादी लेखा

मूल जिम्मेदारी के सवाल तब उठते हैं जब हमें यह तय करना होता है कि कौन किस बोझ को उठाएगा। "एक व्यक्ति जो बोझ के बोझ तले दब गया है, उसे उस बोझ के लिए मूल रूप से जिम्मेदार ठहराना, यह मानना है कि उसे बोझ उठाना है, बाकी सब चीजें समान रहने पर। कोई भी उसके साथ बोझ साझा करने या उसे कम करने के लिए बाध्य नहीं है।" (कुमार 2015, पृष्ठ 252) कुमार मूल जिम्मेदारी के संविदात्मक खाते को इस प्रकार समझाते हैं। "एक व्यक्ति जो बोझ के बोझ तले दब जाता है, वह इसके लिए मूल रूप से जिम्मेदार है, अगर कोई भी उसे इससे बचने में सक्षम बनाने के लिए कुछ और करने के लिए बाध्य नहीं है। बोझ के बोझ के बोझ तले दबने के कारण उसे गलत नहीं मानना, उसे इसके लिए मूल रूप से जिम्मेदार ठहराना है। उसके साथ गलत क्यों नहीं किया गया, इसके औचित्य के लिए प्रासंगिक कारण वे हैं जो यह स्थापित करते हैं कि उसके पास यह चाहने का अच्छा कारण है कि उस प्रकार की स्थिति में उसके साथ जो कुछ भी होता है, वह इस बात पर निर्भर करता है कि वह विकल्पों पर कैसे प्रतिक्रिया करती है, और उस निर्भरता को सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त किया गया था।" (कुमार 2015, पृष्ठ 253)

संविदावाद इस बात का सहज ज्ञान युक्त विवरण देने का दावा करता है कि एजेंटों से कब उचित रूप से बोझ उठाने की अपेक्षा की जा सकती है। आलोचकों का तर्क है कि यह वादा भ्रामक है और संविदावाद वास्तविक जिम्मेदारी के हमारे सहज ज्ञान युक्त निर्णयों का सम्मान करने में विफल रहता है। (विलियम्स 2006, वूरहोवे 2008.)

चर्चा अक्सर निम्नलिखित उदाहरण पर केंद्रित होती है:

खतरनाक अपशिष्ट: शहर के अधिकारियों को आवासीय क्षेत्र के पास पाए जाने वाले खतरनाक अपशिष्ट को हटाने और निपटाने की आवश्यकता होती है। इस निष्कासन से कुछ खतरनाक रसायन निकलेंगे, लेकिन यह अपशिष्ट को वहीं छोड़ देने से कहीं कम खतरनाक है। भले ही अधिकारी सभी उचित सावधानियां बरतें, फिर भी कुछ खतरनाक पदार्थ निकलेंगे - जो सीधे संपर्क में आने वाले किसी भी व्यक्ति के फेफड़ों को नुकसान पहुंचा सकते हैं, लेकिन खुदाई स्थल से दूर रहने वाले और घर के अंदर रहने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए गंभीर खतरा पैदा करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। (स्कैनलॉन 1998, पृष्ठ 257; कुमार 2015, पृष्ठ 264)

सहज रूप से, जब तक वे लोगों को कचरा हटाते समय घर के अंदर रहने की चेतावनी देते हैं, तब तक शहर के अधिकारी वैध रूप से खतरनाक कचरे को हटा सकते हैं। इससे कुछ लोगों को गंभीर नुकसान का जोखिम होता है। लेकिन सभी उपलब्ध विकल्प बदतर हैं: कचरे को वहीं नहीं छोड़ा जा सकता है, जहां वह है, और शहर को खाली करना संभव नहीं है। सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिए अधिकारियों को कुछ लोगों को नुकसान के जोखिम में डालने की अनुमति देने वाला सिद्धांत ऐसा है जिसे कोई भी उचित रूप से अस्वीकार नहीं कर सकता है।

मान लीजिए अधिकारियों ने जोखिम को कम करने के लिए पर्याप्त कदम उठाए हैं। सभी घरों में पर्चे बांटे गए हैं, रेडियो, टेलीविजन और सोशल मीडिया पर घोषणाएं की गई हैं, अखबारों में विज्ञापन दिए गए हैं, खुदाई स्थल के चारों ओर अवरोध लगाए गए हैं, सभी प्रवेश द्वारों पर चेतावनी लगाई गई है, इत्यादि। लेकिन अब शहर के एक नागरिक (उसे क्यूरियस कहें) पर विचार करें, जो विपरीत है। चेतावनियाँ और अवरोध केवल उसकी जिज्ञासा को बढ़ाने के लिए हैं। क्यूरियस को पहले खतरनाक कचरे में कोई दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन अब वह यह देखने की इच्छा विकसित करती है कि आखिर इतना हंगामा किस बात को लेकर है। चेतावनियों को अनदेखा करते हुए, क्यूरियस अवरोधों पर चढ़ जाती है और खुद को खतरनाक रसायनों की खतरनाक खुराक के संपर्क में ले लेती है।

क्यूरियस का बोझ, काफी हद तक पूर्वानुमानित तरीके से, उसके अपने लापरवाह विकल्प का परिणाम है। सहज रूप से, यह उसे उस बोझ के लिए मूल रूप से जिम्मेदार बनाता है। क्यूरियस अपने बोझ के लिए दूसरों को जिम्मेदार नहीं ठहरा सकती। उदाहरण के लिए, वह अपने चिकित्सा खर्चों को वहन करने के लिए शहर (या उसके अधिकारियों) पर मुकदमा नहीं कर सकती। इस अंतर्ज्ञान के लिए एक स्वाभाविक व्याख्या *ज़ब्ती दृष्टिकोण* है: चेतावनियों की अवहेलना करके, क्यूरियस ने दूसरों से यह उम्मीद करने का अपना अधिकार खो दिया है कि वे उसे नुकसान पहुँचाने से बचाएँ या अगर उसे नुकसान पहुँचाया जाता है तो उसका बोझ कम करें।

स्कैनलॉन ज़ब्ती दृष्टिकोण को अस्वीकार करते हुए *विकल्प के मूल्य* के पक्ष में है, जो इस बात पर जोर देता है: "व्यक्तियों के पास जो कुछ भी उनके साथ होता है, उसे चाहने के कारण, और दूसरों के प्रति उनके दायित्व और दूसरों के उनके प्रति दायित्व, इस बात पर निर्भर करते हैं कि वे कैसे प्रतिक्रिया करते हैं।" (स्कैनलॉन 2015, पृष्ठ 106) इस दृष्टिकोण से, यह विकल्प की *उपलब्धता* है जो मायने रखती है, न कि यह कि एजेंट ने कोई *वास्तविक* विकल्प चुना है या नहीं। अगर मुझे बताया जाता है कि मुझे एक निश्चित समय तक अपने थिएटर टिकट लेने होंगे और फिर मैं बिना सोचे-समझे उन्हें समय पर लेने में विफल रहता हूँ, तो मैं इस तथ्य के लिए जिम्मेदार हूँ कि मैं प्रदर्शन से चूक गया। जो मायने रखता है

वह यह है कि मेरे पास इस स्थिति से बचने का अवसर था, भले ही मैंने कोई सचेत निर्णय नहीं लिया हो। (स्कैनलॉन 2015, पृष्ठ 108)

संविदावादी सिद्धांतों को प्रत्येक व्यक्ति के लिए उचित ठहराया जाना चाहिए। इस औचित्य में कुछ कारण बताए जाने चाहिए कि कोई दिया गया सिद्धांत उस व्यक्ति के लिए क्यों सार्थक है। खतरनाक अपशिष्ट मामले में, संविदावादियों का तर्क है कि प्रत्येक व्यक्ति के पास ऐसे समाज में रहने का महत्व है जहाँ उसका भाग्य (आंशिक रूप से) उसके अपने विकल्पों पर निर्भर करता है, भले ही इसका परिणाम यह हो कि वह कभी-कभी खुद को उन बोझों के लिए जिम्मेदार पाता है जिन्हें वह टाल सकता था और उसने सचेत रूप से नहीं चुना।

आलोचकों का तर्क है कि अनुबंधवादी जो विकल्प के मूल्य का हवाला देते हैं, वे खतरनाक अपशिष्ट मामले में सहज ज्ञान युक्त सिद्धांतों को उचित नहीं ठहरा सकते। क्यूरियस के लिए चुनने का अवसर मूल्यवान नहीं है। इसके विपरीत, वह अवसर स्पष्ट रूप से उसे बदतर बनाता है! मूल मामले के निम्नलिखित संस्करण पर विचार करें।

सावधानी बनाम गुप्त: खतरनाक कचरे से निपटने के लिए अधिकारियों के पास दो विकल्प हैं। *सावधानी नीति* के तहत, अधिकारी सार्वजनिक चेतावनी जारी करते हैं, अवरोध खड़े करते हैं, इत्यादि। *गुप्त नीति* के तहत, अधिकारी कचरे को गुप्त रूप से हटाते हैं, जिससे जोखिम के बारे में जनता को कोई जानकारी नहीं मिलती। मान लीजिए कि अधिकारियों को पता है कि, सावधानी नीति के परिणामस्वरूप फेफड़ों की क्षति के मामलों की संख्या में वृद्धि होगी, लेकिन हर पीड़ित व्यक्ति ऐसा होगा जिसने चेतावनियाँ सुनीं और उन पर ध्यान नहीं दिया। इसके विपरीत, जबकि गुप्त नीति के परिणामस्वरूप फेफड़ों की क्षति के मामलों की संख्या कम होगी, *उनमें* से किसी भी व्यक्ति को नुकसान से बचने का कोई अवसर नहीं मिलेगा। अधिकारियों को कौन सी नीति चुननी चाहिए? (विलियम्स 2006, पृष्ठ 253; कुमार 2015, पृष्ठ 269)

सहज रूप से, अधिकारियों को गुप्त नीति के बजाय सावधानी नीति चुननी चाहिए, भले ही अधिक लोगों को नुकसान हो। आलोचकों का कहना है कि विकल्प के मूल्य का उपयोग करने वाले अनुबंधवादी इस परिणाम को प्राप्त नहीं कर सकते। (विलियम्स 2006)। क्यूरियस पर विचार करें। गुप्त नीति उसे सावधानी नीति की तुलना में नुकसान से अधिक सुरक्षा प्रदान करती है, क्योंकि उसके नुकसान की संभावना पूर्व की तुलना में बाद की नीति के तहत अधिक है। और क्योंकि वह अत्यधिक जिज्ञासु है, चेतावनियाँ और अन्य जानकारी क्यूरियस के लिए नकारात्मक मूल्य रखती हैं। चुनने का अवसर उसे और भी बदतर बनाता है। इसलिए, क्यूरियस सावधानी नीति को उचित रूप से अस्वीकार कर सकता है।

संविदावादी इस बात से सहमत हैं कि सावधानी नीति "एकमात्र नैतिक रूप से बचाव योग्य विकल्प है" (कुमार 2015, पृष्ठ 269)। हालांकि, वे तर्क देते हैं कि संविदावाद दो कारणों से यह परिणाम दे सकता है। सबसे पहले, भले ही गुप्त नीति *साधनात्मक रूप से* बेहतर हो, सभी नैतिक एजेंटों के पास "सार्वजनिक अधिकारियों को महत्वपूर्ण जानकारी छिपाने की अनुमति नहीं देने के लिए मजबूत *प्रतीकात्मक* कारण हैं क्योंकि वे तय करते हैं कि जनता के सदस्य इसका आकलन करने और उचित तरीके से जवाब देने में सक्षम नहीं हैं" (कुमार 2015, पृष्ठ 270)। गुप्त पितृसत्तावाद स्पष्ट रूप से लोगों को जिम्मेदार वयस्कों के रूप में व्यवहार करने में विफल रहता है, और इसलिए हर किसी के

पास इसे अस्वीकार करने का कारण है। दूसरा, संविदावादी विशेष व्यक्तियों की विलक्षण प्राथमिकताओं के बजाय सामान्य दृष्टिकोण के खिलाफ सिद्धांतों का मूल्यांकन करने की आवश्यकता पर अपील करेंगे। "हमारा मूल्यांकन विशिष्ट व्यक्तियों के विशेष उद्देश्यों, प्राथमिकताओं और अन्य विशेषताओं पर आधारित नहीं हो सकता है। हमें इसके बजाय लोगों के पास क्या चाहने का कारण है, इस बारे में आम तौर पर उपलब्ध जानकारी पर भरोसा करना चाहिए ... सामान्य कारणों के बारे में।" (स्कैनलॉन 1998, पृष्ठ 203) महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि *क्यूरियस* क्या चाहती है, बल्कि यह है कि उसकी स्थिति में एक *प्रतिनिधि व्यक्ति के पास* क्या चाहने का कारण होगा। और आम तौर पर लोगों के पास जोखिम के प्रति अपने जोखिम पर नियंत्रण चाहने का कारण होता है। सामान्य कारण जोखिम के संविदात्मक खातों (धारा 11) और भविष्य के लोगों के प्रति हमारे दायित्वों (धारा 13) में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

11. संविदावाद जोखिम से कैसे निपटता है?

नैतिक दार्शनिक अक्सर निश्चितता से जुड़े कृत्रिम उदाहरणों पर चर्चा करते हैं। विशेष रूप से, नुकसान की नैतिकता की चर्चा उन मामलों पर केंद्रित होती है जहाँ प्रत्येक क्रिया निश्चित रूप से किसी विशेष व्यक्ति को नुकसान पहुँचाएगी। लेकिन वास्तविक जीवन की नैतिकता में हमेशा व्यापक अनिश्चितता शामिल होती है। अधिकांश वास्तविक "हानिकारक" गतिविधियाँ सामाजिक रूप से उत्पादक होती हैं जो दूसरों पर नुकसान का कुछ जोखिम डालती हैं। (फ्राइड 2012ए, 2012बी) क्या अनुबंधवादी इस बात का कोई विश्वसनीय और विशिष्ट विवरण दे सकते हैं कि ऐसी गतिविधियों की अनुमति कब और क्यों दी जाती है? (जोखिम के विभिन्न अनुबंधवादी विवरणों की अधिक विस्तृत चर्चा के लिए, फ्रिक 2015, फ्राइड 2012ए, हॉर्टन 2017, कुमार 2015 देखें।)

हम एक सरल उदाहरण से शुरुआत करते हैं:

ड्राइविंग: बॉब विकसित दुनिया के एक बड़े शहर में रहता है। उसका दैनिक जीवन इस तथ्य से बहुत बेहतर हो जाता है कि वह और अन्य लोग कार चलाने में सक्षम हैं। बॉब काम पर ड्राइव करता है, सप्ताहांत के लिए शहर से बाहर ड्राइव करता है, स्थानीय शॉपिंग मॉल में ड्राइव करता है, उन वस्तुओं और सेवाओं का आनंद लेता है जो केवल इसलिए उपलब्ध हैं क्योंकि अन्य लोग ड्राइव कर सकते हैं, और इसी तरह। एक सुबह, सड़क पर अपने कुत्ते को टहलाते समय, बॉब एक यातायात दुर्घटना में मारा जाता है। ड्राइवर की कोई गलती नहीं थी - वह तेज गति से गाड़ी नहीं चला रहा था या नशे में नहीं था या अन्यथा गैर-जिम्मेदार नहीं था। बॉब बस बदकिस्मत है। एक बड़े शहर में जहाँ हर दिन लाखों लोग गाड़ी चलाते हैं, इस तरह की दोषरहित घातक दुर्घटनाएँ समय-समय पर होती रहती हैं।

अपने जीवन के दौरान, बॉब को अपने और दूसरों के ड्राइविंग से कई लाभ मिले। लेकिन मान लीजिए कि ये लाभ उसकी असामयिक मृत्यु की कीमत से ज़्यादा हैं। जैसा कि हुआ, बॉब को बेहतर स्थिति में रहना चाहिए था अगर ड्राइविंग की अनुमति नहीं होती। ऐसा लगता है कि बॉब को ड्राइविंग की अनुमति देने वाले किसी भी सिद्धांत को अस्वीकार करने का एक कारण मिल गया है। और यह कारण अन्य लोगों के ड्राइविंग की अनुमति देने के कारणों से ज़्यादा महत्वपूर्ण लगता है। (आखिरकार, उन्हें होने वाली कोई भी असुविधा असमय मृत्यु जितनी बुरी नहीं होगी।) इसलिए ऐसा लगता है कि संविदावाद ड्राइविंग की अनुमति नहीं दे सकता। वास्तव में, संविदावाद को उन *सभी* सामाजिक रूप से उपयोगी

गतिविधियों को प्रतिबंधित करना चाहिए जो *किसी भी तरह* के नुकसान का जोखिम उठाती हैं - इस आधार पर कि, एक बड़ी आबादी में, जीवन भर में, ऐसी कोई भी गतिविधि कम से कम एक मौत का कारण बन सकती है।

उपयोगितावादियों के पास एक आसान समाधान है। ड्राइविंग की अनुमति तभी दी जानी चाहिए जब इससे अपेक्षित समग्र कल्याण अधिकतम हो। मृत्यु का एक छोटा जोखिम व्यक्तिगत लाभों की एक बड़ी संख्या से अधिक है। यदि संविदावाद किसी भी जोखिमपूर्ण गतिविधि की अनुमति नहीं दे सकता है, तो यह उपयोगितावाद के मुकाबले इसे एक अलग नुकसान में डालता है।

एक सरल समाधान संविदावाद के दायरे को सीमित करना है। यदि संविदावाद केवल उन मामलों से निपटता है जहाँ नुकसान निश्चित है, तो उसे जोखिम को संबोधित करने की आवश्यकता नहीं है। फिर हम निश्चित नुकसान के संविदावादी खाते को नुकसान के जोखिमों के उपयोगितावादी खाते के साथ जोड़ सकते हैं। दुर्भाग्य से, इस समाधान की लागत बहुत अधिक है। जोखिम की सर्वव्यापकता और निश्चित नुकसान के मामलों की तुलनात्मक दुर्लभता को देखते हुए, यह बहुलवादी विकल्प संविदावाद को प्रभावी रूप से दरकिनार कर देता है।

दूसरा सरल उपाय यह है कि जोखिम भरे सामाजिक क्रियाकलापों की कभी अनुमति न दी जाए। कुछ संविदावादी इस चरम संशोधनवाद को अपनाते हैं। और यह भी अप्रासंगिकता का खतरा पैदा करता है। लोग जोखिम को कभी पूरी तरह से नहीं छोड़ेंगे, और हम स्वाभाविक रूप से अपनी जोखिम भरी गतिविधियों के लिए नैतिक सिद्धांत की ओर रुख करते हैं। यदि संविदावाद इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में चुप है, तो यह व्यावहारिक प्रासंगिकता का कोई भी दावा खो देता है।

संविदावाद के लिए चुनौती यह है कि जोखिम पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने और उपयोगितावाद में ढह जाने के बीच मध्य मार्ग निकाला जाए।

एक केंद्रीय प्रश्न यह है कि जोखिम के बारे में हमारा संविदात्मक मूल्यांकन पूर्व-पश्चात होना चाहिए या पूर्व-पूर्व। संविदात्मकता हमें प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने नैतिक सिद्धांतों को उचित ठहराने के लिए कहती है। ड्राइविंग की अनुमति देने वाले सिद्धांत को बॉब के लिए उचित ठहराया जाना चाहिए। लेकिन हम इस औचित्य के घटित होने की कल्पना कब करते हैं? मान लीजिए कि हम बॉब को दो सिद्धांतों के बीच एक विकल्प देते हैं: एक ड्राइविंग की अनुमति देता है और दूसरा इसे मना करता है। बॉब यह चुनाव कब करता है? क्या वह पहले से चुनता है - शायद शहर में जाने से पहले या उसके जीवन की शुरुआत से पहले? या क्या वह पीछे मुड़कर देखता है - जब उसे पता चलता है कि उसका जीवन वास्तव में कैसा रहा है?

जोखिम और अनिश्चितता से जुड़े मामलों में, ये दो अस्थायी दृष्टिकोण बहुत अलग-अलग ज्ञानमीमांसा दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। पूर्व में, बॉब जानता है कि ऐसे शहर में रहना जहाँ ड्राइविंग की अनुमति है, उसे कार दुर्घटना में मृत्यु के बहुत कम जोखिम में डालता है जहाँ किसी की कोई गलती नहीं है। पूर्व में, बॉब जानता है कि ऐसे शहर में रहना जहाँ ड्राइविंग की अनुमति है, वास्तव में *उसकी* मृत्यु का कारण बना है।

संविदावाद के कुछ रूप स्पष्ट रूप से पूर्व-पश्चात मूल्यांकन के बजाय पूर्व-पूर्व का पक्ष लेते हैं। उदाहरण के लिए, रॉल्स अपने दलों से अपने समाज को संचालित करने के लिए सिद्धांतों को चुनने के लिए कहता

है, जो कि उनके जीवन के बारे में सामान्य ज्ञान के आधार पर हो सकता है, न कि उनकी विशिष्ट परिस्थितियों के बारे में विशेष जानकारी के आधार पर। इसके विपरीत, स्कैनलोनियन संविदावाद में आमतौर पर वास्तविक लोगों को औचित्य की आवश्यकता होती है जो अपनी स्थिति से अवगत होते हैं। अपनी 1998 की पुस्तक में, स्कैनलॉन स्पष्ट रूप से पूर्व-पश्चात औचित्य का पक्ष लेते हैं। हालाँकि, अधिकांश संविदावादी (खुद स्कैनलॉन सहित) अब या तो पूर्व-पश्चात संविदावाद या पूर्व-पश्चात और पूर्व-पश्चात मूल्यांकन दोनों को मिलाकर कुछ संकर दृष्टिकोण का पक्ष लेते हैं। (स्कैनलॉन 2013, कुमार 2015, फ्रिक 2015.)

हमारे मूल ड्राइविंग मामले में, पूर्व औचित्य सहज रूप से सही परिणाम देता प्रतीत होता है। जब वह पहले से संभावनाओं को देखता है, तो बॉब यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि मृत्यु का बहुत छोटा जोखिम - उसके अपने दृष्टिकोण से - उन बड़ी संख्या में लाभों से अधिक है जिनका वह लगभग निश्चित रूप से आनंद लेगा। यदि असंतुलन पर्याप्त रूप से बड़ा है, तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि बॉब के लिए ड्राइविंग की अनुमति देने वाले सिद्धांत को अस्वीकार करना उचित नहीं होगा। (कुछ अत्यधिक जोखिम-विरोधी व्यक्ति शायद अभी भी ड्राइविंग पर आपत्ति करेंगे, लेकिन अनुबंधवादी जवाब दे सकते हैं कि यह अस्वीकृति उचित नहीं है।)

दुर्भाग्य से, इस संविदात्मक प्रतिक्रिया में दो समस्याएं हैं। सबसे पहले, यदि सभी नागरिक जोखिम और लाभ के समान पैटर्न का सामना करते हैं, तो यह पूर्वानुमेय औचित्य व्यवहार में उपयोगितावाद में ढहने का खतरा है। इस प्रकार संविदात्मकता अपनी विशिष्टता खोने का जोखिम उठाती है। दूसरा, यदि नागरिक अलग-अलग जोखिम प्रोफाइल का सामना करते हैं, तो पूर्वानुमेय संविदात्मकता भी किसी भी जोखिम भरे व्यवहार को उचित ठहराने में खुद को असमर्थ पा सकती है। एक नए उदाहरण पर विचार करें:

उड़ान: वाणिज्यिक हवाई यात्रा कई लोगों को कई लाभ पहुंचाती है। हालांकि, इसमें मृत्यु का छोटा जोखिम भी होता है। इस जोखिम का कुछ हिस्सा उन लोगों पर पड़ता है जिन्हें हवाई यात्रा से लाभ होता है - खास तौर पर यात्री। लेकिन कुछ लोग जो इसी जोखिम के संपर्क में आते हैं, उन्हें कोई लाभ नहीं मिलता। जब एक अमिश किसान है जो आधुनिक जीवन के सभी 'लाभों' से पूरी तरह से दूर रहता है। जब दो प्रमुख शहरों के बीच हवाई यातायात के उड़ान पथ के नीचे रहता है। (जब से इस उड़ान पथ के बारे में सलाह नहीं ली गई थी।) एक दिन, एक गुजरते हुए हवाई जहाज़ का मलबा जब पर गिरता है और उसकी मौत हो जाती है। (यह उदाहरण कुमार 2015 से लिया गया है, जो एशफ़ोर्ड 2003 पर आधारित है।)

जब को स्पष्ट रूप से उड़ान की अनुमति देने वाले किसी भी सिद्धांत के खिलाफ़ एक मजबूत पूर्व शिकायत है। लेकिन उसके पास एक पूर्व शिकायत भी है। इससे पहले कि वह जानता है कि वह गिरते मलबे से मर जाएगा, जब को उड़ान से किसी भी तरह के लाभ की उम्मीद नहीं है। (वास्तव में, वह उड़ान को किसी के लिए वास्तव में फायदेमंद नहीं मानता है!) जब किसी भी ऐसे सिद्धांत को पहले से ही अस्वीकार करना चाहेगा जो बिना किसी क्षतिपूर्ति लाभ के उस पर मृत्यु का जोखिम थोपता है। एक संविदावादी दृष्टिकोण से, यह अस्वीकृति उचित लगती है।

पूर्व संविदावादियों के लिए दो चुनौतियाँ हैं (क) जब की शिकायत को खारिज करने के लिए एक सैद्धांतिक औचित्य प्रस्तुत करना; और (ख) यह सुनिश्चित करना कि वह औचित्य उपयोगितावाद में न

बदल जाए। एक संभावना यह तर्क देना है कि क्यूरियस की तरह, जेब संविदावादी उद्देश्यों के लिए बहुत विलक्षण है। हमें यह पूछना चाहिए कि आम लोगों के पास अस्वीकार करने का क्या कारण है, बजाय इसके कि हम किसी एक व्यक्ति की अजीबोगरीब प्रवृत्तियों की जाँच करें। हालाँकि, क्यूरियस के विपरीत जोखिम लेने की प्रवृत्ति के विपरीत, जेब द्वारा आधुनिक जीवन को अस्वीकार करना उचित और (प्रथम दृष्टया) उचित माना जाता है। यदि संविदावाद जेब के विश्वदृष्टिकोण को "अनुचित" मानकर अस्वीकार करता है, तो वह इस बात पर आपत्ति कर सकता है कि संविदावाद इस प्रकार उसे एक तर्कसंगत एजेंट के रूप में उचित सम्मान देने में विफल रहता है।

अनुबंधवादी के लिए बेहतर विकल्प यह है कि वह केवल उड़ान से संबंधित कृत्रिम सिद्धांतों के बजाय सभी जोखिमपूर्ण गतिविधियों पर लागू होने वाले व्यापक सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित करे। जेब को हवाई यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलता है। लेकिन वह, बाकी सभी लोगों की तरह, ऐसे समाज में रहने से लाभान्वित होता है जहाँ हर कोई अपने मूल्यों के अनुसार अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र है। इस प्रकार जेब के पास ऐसे किसी भी सिद्धांत को अस्वीकार करने का कारण है जो आम तौर पर लोगों को उचित जीवनशैली विकल्पों को अपनाने से रोकता है, भले ही उनमें से कुछ विकल्प दूसरों पर मृत्यु का छोटा जोखिम डालते हों।

पूर्व संविदावाद के लिए एक और समस्या यह है कि, कुछ अन्य संभावित मामलों में, पूर्व-पश्चात मूल्यांकन ही सबसे उपयुक्त लगता है। फ्रांसेस काम द्वारा प्रस्तुत दो परिदृश्यों की तुलना करें (काम 2007, पृष्ठ 273; फ्राइड 2012ए, पृष्ठ 47):

एम्बुलेंस I : क्या हमारे शहर को अपनी एम्बुलेंसों को अस्पताल ले जाते समय तेज गति से चलने की अनुमति देनी चाहिए, जबकि ऐसा करने से तेज गति से चलने के कारण मरने वाले प्रत्येक पैदल यात्री के बदले पांच बीमार यात्रियों की जान बच जाएगी?

एम्बुलेंस II : क्या हमारे शहर को अपने एम्बुलेंस चालकों को किसी पहचान योग्य पैदल यात्री की जान बचाने के लिए ब्रेक लगाने से प्रतिबंधित कर देना चाहिए, जब ऐसा हो कि ब्रेक लगाने के कारण समय की हानि के कारण एम्बुलेंस में बैठे पांच यात्रियों की मृत्यु हो जाए?

कई लोग यह निर्णय करते हैं कि पहली नीति स्वीकार्य है, जबकि दूसरी स्वीकार्य नहीं है। (कम्म 2007, लेनमैन 2008) इससे कुछ संविदावादी संकर दृष्टिकोण का पक्ष लेते हैं, जो पूर्व-पश्चात और पूर्व-पूर्व मूल्यांकन को मिला देता है। (उदाहरण के लिए, लेनमैन 2008) सभी को पहले से ही एक ऐसी नीति पर सहमत होने के लिए कहना एक बात है, जिसके परिणामस्वरूप कुछ पैदल यात्रियों की मृत्यु हो सकती है, लेकिन *इस विशेष पैदल यात्री* से व्यापक भलाई के लिए अपना जीवन बलिदान करने के लिए कहना एक अलग बात है!

दुर्भाग्य से, संविदावाद के आलोचक आरोप लगाते हैं कि संकर दृष्टिकोण उन मामलों में अपने आप में अविश्वसनीय परिणाम उत्पन्न करते हैं जहाँ पक्षों को अपने भाग्य के बारे में असममित जानकारी होती है। (फ्राइड 2012ए, पृष्ठ 53-54) सोफिया रीबेटान्ज़ (रीबेटान्ज़ 1998) द्वारा प्रस्तुत अंतिम मामले पर विचार करें:

बिना विस्फोट वाली खदानें: सौ कर्मचारी एक ऐसे क्षेत्र में काम कर रहे हैं, जिसके बारे में ज्ञात है कि वहाँ एक बिना विस्फोट वाली खदान है। एक अन्य व्यक्ति, Z, एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो खदान को

निष्क्रिय कर सकता है। यदि Z खदान को निष्क्रिय कर देता है, तो Z को निमोनिया होना निश्चित है। यदि Z खदान को निष्क्रिय नहीं करता है, तो यह निश्चित है कि 100 कर्मचारियों में से 1 गंभीर रूप से घायल हो जाएगा। यह गंभीर चोट निमोनिया से पीड़ित होने से दस गुना अधिक गंभीर है।

Z को (मामूली) नुकसान की निश्चितता का सामना करना पड़ता है, जबकि प्रत्येक कर्मचारी को (अधिक) नुकसान की 1% संभावना का सामना करना पड़ता है। यदि Z को इस सूचना विषमता का सहारा लेने की अनुमति दी जाती है, तो Z की शिकायत किसी भी व्यक्तिगत कर्मचारी की शिकायत पर भारी पड़ती है। इस प्रकार Z किसी भी सिद्धांत को उचित रूप से अस्वीकार कर सकता है जिसके लिए Z को खदान को निष्क्रिय करना आवश्यक है। लेकिन यह प्रति-सहज लगता है, क्योंकि निश्चित परिणाम किसी और के लिए बहुत अधिक नुकसान है। हाइब्रिड अनुबंधवादियों के लिए चुनौती या तो इस परिणाम से बचना है या यह स्पष्ट करना है कि यह क्यों उचित है। (ओस्टुका 2011, रीबेटान्ज़ 1998। एक तर्क के लिए कि अनुबंधवाद इस समस्या को हल नहीं कर सकता है, फ्राइड 2012a, पृष्ठ 54 देखें)

12. क्या संविदावाद पशुओं की रक्षा कर सकता है?

सामाजिक अनुबंध सिद्धांत कुख्यात रूप से गैर-मानव जानवरों को छोड़ देते हैं। यदि सभी नैतिक दायित्व सामाजिक अनुबंध के पक्षों के बीच हैं, तो हमारे पास उन जानवरों के संबंध में कोई दायित्व नहीं है जो अनुबंध के पक्ष नहीं हो सकते हैं। इसलिए (उदाहरण के लिए) गैर-तर्कसंगत जानवरों को प्रताड़ित करना गलत नहीं हो सकता। इसके विपरीत, उपयोगितावादियों को यह समझाने में कोई कठिनाई नहीं होती है कि जानवरों को प्रताड़ित करना गलत क्यों है। ऐसा लगता है कि यह अनुबंधवाद को तुलनात्मक रूप से नुकसानदेह बनाता है। क्या अनुबंधवाद जानवरों के प्रति हमारे नैतिक दायित्वों का पर्याप्त विवरण दे सकता है? क्या इसकी आवश्यकता है?

स्कैनलॉन दो समाधान सुझाता है। पहला है अपने विवरण के दायरे को सीमित करना। संविदावाद नैतिकता के पूरे विवरण का विवरण नहीं है, बल्कि केवल इस बात का विवरण है कि हम दूसरे व्यक्तियों के प्रति क्या दायित्व रखते हैं। इससे यह संभावना खुली रह जाती है कि जानवरों के प्रति हमारे दायित्व नैतिकता के इस हिस्से से बाहर हैं। स्कैनलॉन प्राकृतिक पर्यावरण के संबंध में हमारे किसी भी नैतिक दायित्व को भी स्पष्ट रूप से अलग रखता है (स्कैनलॉन 1998, पृष्ठ 179)।

स्कैनलॉन ने एक संभावित तरीका भी सुझाया है जिससे जानवरों के प्रति दायित्वों को संविदावाद के भीतर समायोजित किया जा सकता है। यह ट्रस्टियों की धारणा के माध्यम से है, जिन्हें प्रस्तावित सिद्धांतों के औचित्य की पेशकश की जा सकती है, उन जानवरों की ओर से जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं (स्कैनलॉन 1998, पृष्ठ 183)।

उपयोगितावादियों का कहना है कि यह दूसरा समाधान इस बात का बहुत अप्रत्यक्ष विवरण देता है कि आखिरकार जानवरों के प्रति हमारे दायित्वों का आधार क्या है। यह तथ्य कि जानवरों को अनावश्यक दर्द देना गलत है, इस धारणा के माध्यम से सबसे अधिक प्रशंसनीय रूप से नहीं समझाया जा सकता है कि क्या यह व्यवहार जानवरों के ट्रस्टी के लिए उचित ठहराया जा सकता है। बल्कि, यह केवल इसलिए गलत है क्योंकि जानवर पीड़ा महसूस करता है। एक उपयोगितावादी यह भी कहेगा कि, एक बार जब हम महसूस करते हैं कि जानवरों की पीड़ा के मामले में यही गलत है, तो हमें मानव पीड़ा के बारे में भी यही निष्कर्ष निकालना चाहिए। यह तर्कसंगत एजेंसी की उनकी क्षमता के बजाय पीड़ा सहने की

उनकी क्षमता है जो मनुष्यों को प्रताड़ित करने की गलतता को समझाने में सबसे प्रमुख भूमिका निभाती है।

एक संविदावादी इस प्रकार उत्तर दे सकता है। संविदावाद गलत होने की केंद्रीय भावना को पकड़ता है, जो इस बात में भूमिका निभाता है कि व्यक्ति किस बात के लिए एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी हैं। जानवरों का मामला दिखाता है कि यह गलत होने की एकमात्र धारणा नहीं है। लेकिन, एक बार जब हम दोनों मामलों के बीच के अंतरों पर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि एक दूसरे के प्रति हमारे दायित्व जानवरों के प्रति हमारे किसी भी दायित्व से इतने अलग क्यों हैं - ठीक इसलिए क्योंकि हम उनके प्रति खुद को सार्थक रूप से उचित नहीं ठहरा सकते हैं। पशु संविदावादी के लिए कोई विशेष समस्या नहीं है, बल्कि संविदावादी दृष्टिकोण के बारे में क्या विशिष्ट है, यह पता लगाने का अवसर है।

13. क्या संविदावाद भविष्य के लोगों की रक्षा कर सकता है?

किसी भी सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के सामने आने वाली एक और समस्या भविष्य के लोगों के प्रति हमारे दायित्वों से संबंधित है। यह देखना कठिन है कि हम ऐसे लोगों के प्रति कैसे कोई दायित्व रख सकते हैं, क्योंकि वे हमारे अनुबंध के पक्षकार नहीं हो सकते। यह मुख्य रूप से दूर की पीढ़ियों के बीच पारस्परिक रूप से लाभप्रद *बातचीत* की किसी भी संभावना के अभाव के कारण है। भविष्य की पीढ़ियों के जीवन की गुणवत्ता बहुत हद तक वर्तमान पीढ़ी के निर्णयों पर निर्भर करती है। इसके विपरीत, हमारे जीवन की गुणवत्ता उनके निर्णयों से बिल्कुल भी प्रभावित नहीं होती है। हम भावी पीढ़ी के लिए (या उनके लिए) बहुत कुछ कर सकते हैं लेकिन भावी पीढ़ी हमारे लिए (या उनके लिए) कुछ नहीं कर सकती। इस शक्ति असंतुलन को अक्सर ह्यूम के "न्याय की परिस्थितियों" की अनुपस्थिति के संदर्भ में वर्णित किया जाता है। (यह वाक्यांश रॉल्स 1971, पृष्ठ 126-130 से उधार लिया गया है।)

अनुबंधवादियों के लिए, जिनके लिए नैतिकता पारस्परिक लाभ के लिए एक समझौता है, इसका अर्थ है कि भविष्य के लोगों के प्रति हमारा कोई दायित्व नहीं है, जिनके साथ हम बातचीत नहीं कर सकते। रॉल्स जैसे लोगों के लिए भी ऐसी ही समस्या उत्पन्न होती है, जो सामाजिक अनुबंध को स्वार्थी व्यवहार के कुछ संशोधन पर आधारित करना चाहते हैं - जैसे कि अज्ञानता के पर्दे के पीछे स्वार्थ।

इसके विपरीत, संविदावाद इस विशेष समस्या से आसानी से बच जाता है, क्योंकि यह यह मानकर शुरू होता है कि नैतिक एजेंट दूसरों के सामने खुद को सही ठहराने की इच्छा से प्रेरित होते हैं। ऐसा कोई कारण नहीं है कि वे अन्य लोग वर्तमान में मौजूद लोग ही क्यों हों। कार्य करने का तरीका तय करते समय, मैं खुद से पूछ सकता हूँ कि क्या भविष्य के लोग जो मेरे कार्यों से प्रभावित होंगे, वे उन कार्यों की अनुमति देने वाले सिद्धांत को उचित रूप से अस्वीकार कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, अगर मैं भविष्य में एक ऐसा पावर प्लान्ट बनाना चाहता हूँ जो विकिरण लीक करेगा, तो यह पूछना बिल्कुल सही है कि क्या इसके परिणामस्वरूप पीड़ित होने वाले लोग मेरे व्यवहार पर उचित रूप से आपत्ति कर सकते हैं। क्योंकि यह वास्तविक सौदेबाजी के बजाय उचित अस्वीकृति की संभावना के साथ काम करता है, इसलिए संविदावाद भविष्य के लोगों के प्रति दायित्वों को समायोजित कर सकता है। यह अन्य सामाजिक अनुबंध सिद्धांतों की तुलना में एक महत्वपूर्ण लाभ है।

हालाँकि, भविष्य के लोगों के बारे में एक दूसरी समस्या है - जो संविदावाद पर लागू होती है। यह समस्या हाल ही में दार्शनिक बहस में डेरेक पार्फिट के काम के कारण प्रमुखता से उभरी है, जिसका हम निम्नलिखित उदाहरण देते हैं (पार्फिट 1984, पृष्ठ 351-379):

गर्मी या सर्दी का बच्चा। मैरी यह तय कर रही है कि उसे कब बच्चा पैदा करना है। वह गर्मी या सर्दी में बच्चा पैदा कर सकती है। मैरी एक दुर्लभ बीमारी से पीड़ित है, जिसका मतलब है कि अगर वह सर्दियों में बच्चे को जन्म देती है, तो उसे गंभीर बीमारियाँ होंगी, जिससे उसके जीवन की गुणवत्ता कम हो जाएगी। हालाँकि, सर्दियों में पैदा होने वाला बच्चा अभी भी जीने लायक जीवन जी सकता है, और अगर मैरी गर्मियों में बच्चा पैदा करने का फैसला करती है, तो एक बिल्कुल अलग बच्चा पैदा होगा। मैरी के लिए गर्मियों में बच्चा पैदा करना थोड़ा असुविधाजनक है। (शायद वह गर्म मौसम में भारी गर्भवती होने का मन नहीं करती।) इसलिए, वह सर्दियों में जन्म देने का विकल्प चुनती है।

मैरी का व्यवहार नैतिक रूप से गलत लगता है। उपयोगितावादियों के पास मैरी के व्यवहार के गलत होने का एक सरल कारण है, क्योंकि वह जितना कर सकती थी, उससे कम मानवीय खुशी लाती है। फिर भी ऐसा लगता है कि संविदावाद इस अंतर्ज्ञान को नहीं पकड़ सकता। मैरी के व्यवहार की अनुमति देने वाले सिद्धांत पर विचार करें। यदि मैरी का व्यवहार गलत है, तो यह सिद्धांत ऐसा होना चाहिए जिसे कोई व्यक्ति उचित रूप से अस्वीकार कर सकता है। लेकिन कौन? विंटर चाइल्ड नहीं - क्योंकि अन्यथा वह कभी अस्तित्व में ही नहीं होता। और समर चाइल्ड नहीं - क्योंकि वह अस्तित्व में ही नहीं है।

शायद सबसे आशाजनक संविदावादी बचाव, एक बार फिर, इस संभावना में निहित है कि किसी सिद्धांत को अस्वीकार करने के मेरे आधार आवश्यक रूप से मेरे कल्याण पर इसके प्रत्यक्ष प्रभाव तक सीमित नहीं हैं। हम यहाँ संविदावादी द्वारा किए जा सकने वाले दो कदमों को अलग कर सकते हैं। वे तर्क दे सकते हैं (1) कि किसी सिद्धांत को अस्वीकार करने का आधार मेरे *कल्याण पर इसके प्रभाव के कारण नहीं होना चाहिए*; या (2) कि मेरे कल्याण पर इसके प्रभाव के कारण नहीं होना चाहिए। सहज रूप से, मैरी के व्यवहार के बारे में जो आपत्तिजनक है उसका कल्याण या भविष्य के व्यक्तियों की पहचान से कोई लेना-देना नहीं है। बल्कि गलत यह है कि मैरी 'अपने भविष्य के बच्चे' के प्रति पर्याप्त सम्मान दिखाने में विफल रहती है - चाहे वह बच्चा कोई भी हो। भले ही ऐसा कोई विशेष व्यक्ति न हो जिसके बारे में कहा जा सके कि उसे नुकसान पहुँचाया गया है, फिर भी यह शिकायत करने का वैध आधार है कि मैरी के व्यवहार की अनुमति देने वाला सिद्धांत भविष्य के लोगों के प्रति अपर्याप्त सम्मान दिखाता है। संविदावादी के लिए चुनौती इस शिकायत को विंटर चाइल्ड की ओर से की जा सकने वाली शिकायत में बदलना है। (इस तरह के अनुवाद के एक हालिया प्रयास के लिए, कुमार 2003ए, 2009 देखें। आलोचना के लिए, पार्फिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 235 देखें)

ऑन व्हाट मैटर्स के अध्याय 22 में, पार्फिट तर्क देते हैं कि अवैयक्तिक प्रतिबंध - जो परिणामों की अवैयक्तिक अच्छाई या बुराई की अपील को खारिज करता है - संविदावाद के किसी भी रूप को छोड़ देता है जो व्यक्तिवादी प्रतिबंध को शामिल करता है, गैर-पहचान समस्या का जवाब देने में असमर्थ है।

इसके बजाय, पार्फिट का तर्क है कि संविदावादियों को उचित अस्वीकृति के आधार के रूप में *व्यक्तिगत* और *निष्पक्ष* दोनों कारणों की अनुमति देनी चाहिए। यहाँ, निष्पक्ष कारण नैतिक दावों या व्यक्तियों की भलाई पर आधारित हैं। "हमारे पास प्रत्येक व्यक्ति या व्यक्ति की भलाई की परवाह करने

के लिए ऐसे निष्पक्ष कारण हैं" (पार्फिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 238)। निष्पक्ष कारणों की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे संकीर्ण रूप से व्यक्ति-प्रभावित नहीं होते हैं। अलग-अलग लोगों के विकल्प में, हमारे पास भविष्य के लोगों की भलाई को अधिकतम करने के लिए एक निष्पक्ष कारण होता है - भले ही अलग-अलग संभावित भविष्य में संभावित लोगों के अलग-अलग समूह शामिल हों। "चूँकि [गैर-पहचान समस्या के कारण] हम उन *व्यक्तिगत* कारणों की अपील नहीं कर सकते हैं जो उन लोगों के पास हैं जो *कभी अस्तित्व में नहीं हैं*, इसलिए हमें उन निष्पक्ष कारणों की अपील करनी चाहिए जो उन लोगों के पास हैं जो अस्तित्व में हैं" (पार्फिट 2011, खंड 2, पृष्ठ 240)।

व्यक्तिवादी प्रतिबंध की तरह, हम सोच सकते हैं कि क्या निष्पक्ष कारणों की स्वीकृति संविदावाद की भावना को प्रभावी रूप से त्याग देती है। यदि हर उपस्थित व्यक्ति के पास समान निष्पक्ष कारण हैं, और यदि वे कारण किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत कारणों से अधिक महत्वपूर्ण नहीं हो सकते हैं, तो संविदावाद का परिणामी अधिक निष्पक्ष सूत्रीकरण नियम परिणामवाद के साथ अभिसरित होगा। लेकिन क्या यह परिणाम हमें *स्कैनलॉन* के संविदावाद के बारे में कुछ दिलचस्प बताता है? अधिक सामान्य रूप से, क्या परिणामी सिद्धांत संविदावाद की विशिष्ट विशेषताओं को बनाए रखेगा जो उन लोगों को आकर्षित करते हैं जो कांटियन नैतिकता या नियम परिणामवाद जैसे परिचित विकल्पों से असंतुष्ट हैं?

भावी लोगों के बारे में बहस संविदावाद के भीतर अन्य हालिया विवादों से भी जुड़ती है, खासकर जोखिम पर साहित्य से। पूर्व-पोस्ट और पूर्व-पूर्व औचित्य के बीच का अंतर विशेष रूप से गैर-पहचान मामलों में महत्वपूर्ण है, जहां पूर्व-पोस्ट औचित्य विशेष व्यक्तियों को दिया जा सकता है जबकि पूर्व-पूर्व औचित्य केवल व्यक्ति प्रकारों से निपट सकता है। क्या संविदावादियों को अपने व्यक्ति-प्रभावित सिद्धांतों को पूर्व-पोस्ट या पूर्व-पूर्व व्याख्या देनी चाहिए? (वेनबर्ग 2003 और 2015 एक पूर्व-पोस्ट व्याख्या का बचाव करते हैं, हालांकि स्कैनलोनियन के बजाय रॉल्सियन ढांचे के भीतर; जबकि पार्फिट 2017 स्पष्ट रूप से पूर्व-पूर्व विकल्प निर्धारित करता है।)

एक और उभरती हुई बहस यह है कि क्या संविदावाद मानव विलुप्त होने के जोखिम वाले मामलों में प्रशंसनीय फैसले दे सकता है। यहाँ संविदावाद के लिए प्रथम दृष्टया समस्या यह है कि, क्योंकि जिस परिणाम में हम आसन्न विलुप्त होने से बचने में विफल होते हैं, उसमें कोई भी भविष्य के लोग शामिल नहीं होते हैं, कोई भी (विशेष या प्रतिनिधि) भविष्य का व्यक्ति नहीं है जो वर्तमान लोगों को विलुप्त होने के जोखिमों को अनदेखा करने और वर्तमान जरूरतों को पूरा करने पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करने का निर्देश देने वाले सिद्धांतों को उचित रूप से अस्वीकार करने का अधिकार रखता हो।

उपयोगितावाद

□ उपकरण

○

उपयोगितावाद (Utilitarianism) एक आचार सिद्धांत है जिसकी एकांतिक मान्यता है कि आचरण (action) एकमात्र तभी नैतिक है जब वह अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख की अभिवृद्धि करता है। राजनीतिक तथा अन्य क्षेत्रों में इसका संबंध मुख्यतः बेंथम (1748-1832) तथा जान स्टुअर्ट [मिल](#) (1806-

73) से रहा है। परंतु इसका इतिहास और प्राचीन है, ह्यूम जैसे दार्शनिकों के विचारों से प्रभावित, जो उदारता को ही सबसे महान गुण मानते थे तथा व्यक्तिविशेष के व्यवहार से दूसरों के सुख में वृद्धि ही उदारता का मापदंड समझते थे।

उपयोगितावाद के संबंध में प्रायः कुछ अस्पष्ट ओछी धारणाएँ हैं। इसके आलोचकों का कहना है कि यह सिद्धांत, सुंदरता, शालीनता एवं विशिष्टता की उपेक्षा कर केवल उपयोगिता को महत्त्व देता है। पूर्वपक्ष का इसपर यह आरोप है कि यह केवल लौकिक स्वार्थ को महत्त्व देता है। किंतु ऐसी आलोचना सर्वथा समुचित नहीं कही जा सकती।

परिचय

उपयोगितावाद अनेक सापेक्ष विचारों को महत्त्व देता है। जैसे, आनंद ही सबसे वांछनीय वस्तु है और यह जितना अधिक हो उतना ही श्रेयस्कर है। इसका एक भ्रामक निष्कर्ष यह है कि दुःख ही सबसे अवांछनीय वस्तु है और यह जितना कम भोगना पड़े उतना ही अच्छा है। इससे यह निर्दिष्ट है कि नैतिक अभिकर्ता का किसी भी परिस्थिति में ऐसा ही आचरण सदाचार माना जाएगा जो स्वेच्छया किया गया हो, जो संबंधित लोगों के लिए महत्तम सुख की सृष्टि करता हो अथवा कर सकने की

संभावना रखता हो और जहाँ पर दुःख अवश्यंभावी है वहाँ उसे यथासंभव कम-से-कम करने का प्रयत्न करता हो।

ऐसे विचारों में निहित भावों की विवेचना एकपक्षीय नहीं हो सकती, फिर भी आनंद भी तुच्छ तथा दुःख भी महान हो सकता है और कोई यह सिद्ध नहीं कर सकता कि आनंद नित्य श्रेय तथा दुःख नित्य हेय है। यह भी स्पष्ट है कि "सुख" की ठीक-ठीक परिभाषा करना, यदि असंभव नहीं तो, कठिन अवश्य है। जर्मन दार्शनिक नीत्शे ने एक बार प्रसिद्ध घोषणा की कि "सुख कौन चाहता है? केवल अंग्रेज।" अधिकांश भारतीय विचारों में जोर निराशक्ति पर ही दिया गया है, जिससे आनंद की माप क्षणस्थायी एवं सुख कुछ निःसार प्रतीत होता है। वास्तव में उपयोगितावाद का पूर्णतः तर्कसम्मत एवं स्थायी अनुयायी होना कुछ सरल नहीं, फिर भी सिद्धांत तथा व्यवहार में सामंजस्य स्थापित करने के प्रयत्न के कारण और जीवतत्त्व के लिए स्वस्थ तथा नैतिक अच्छाई का मार्ग निर्दिष्ट करनेवाले आनंद को मनुष्य के स्वाभाविक मार्गदर्शन के रूप में प्रतिष्ठित करने के कारण उपयोगितावाद कुछ आकर्षण रखता है और एतदर्थ सामान्य भी है।

बेंथम ने लिखा है, "प्रकृति ने मनुष्य को दो प्रभुओं सुख एवं दुःख, के शासन में रखा है। केवल इन्हीं को यू सूचित करने की शक्ति प्राप्त है कि हमें क्या करना चाहिए तथा हम क्या करेंगे। इनके सिंहासन के एक ओर उचितानुचित निर्धारण का मान बँधा है, दूसरी ओर कार्य कारण का चक्र।" कोई भी इस कथन में त्रुटि निकाल सकता है। वस्तुतः उपयोगितावादियों की सबसे बड़ी त्रुटि उनकी दार्शनिक पकड़ की कमजोरी में ही रही है। परंतु उनके द्वारा वास्तविक सुधारों को जो महत्त्व दिया गया, तत्कालीन परिस्थितियों में वह सामाजिक चिंतन के क्षेत्र में निस्संदेह नया कदम था। दूरदर्शी तथा कुशल व्यवस्थापकों द्वारा ही समाजकल्याण संपन्न हो सकता है, ऐसी कल्पना की गई। बेंथम के शब्दों में, व्यवस्थापक ही बुद्धि तथा विधि (कानून) द्वारा सुख रूपी पट बुन सकता है।

बेंथम ने न केवल इंग्लैंड वरन् यूरोप के अन्य देशों के विचारों को भी अत्यंत प्रभावित किया। जेलों में सुधार में, न्यायव्यवहार को सरल करने में, अमानुषिक परिणामहीन दंड व्यवस्था हटाने में, बेंथम से बड़ी सहायता प्राप्त हुई। जब उसे निश्चय हो गया कि संसदीय सुधार के बिना वैधानिक सुधार असंभव है तब वह उस ओर

आकर्षित हुआ। उपयोगितावाद के आर्थिक उद्देश्यों का निरूपण, जो मुख्यतः निर्बंध व्यापार पर वैधानिक नियंत्रणों की समाप्ति से संबंधित है, रिकार्डों के साहित्य में अत्यंत सुंदर ढंग से हुआ है। सिद्धांत निरूपण की अपेक्षा, जो उपयोगितावादियों का विशेष इष्ट कभी न रहा, आजकल राजनीतिक कार्यक्रमों को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा है। किंतु इस दर्शन की स्थायी देन नैतिकता तथा सामाजिक अंगों के कार्य में प्रत्यक्ष संबंध का सिद्धांत है। (